नवछन्द

(अरूज़े-नौ)

(हिन्दी-उर्दू के लिए नवीन छन्दशास्त्र)

रचनाकार

पण्डित सुघोष भारद्वाज

तख़ल्लुस 'ख़्वाब' अकबराबादी

प्रकाशक

ऐवाने-ख़्वाब

कमला नगर, आगरा-282004

नाम	: **पण्डित सुघोष भारद्वाज**
तख़ल्लुस	: 'ख़्वाब' अकबराबादी
कृति	: नवछन्द (अरूज़े-नौ)
प्रकाशन वर्ष	: 1995 ई०
प्रथम संस्करण	: 1000 प्रतियाँ
मूल्य	: 20-00 रुपये मात्र
मुद्रणालय	: राष्ट्रभाषा प्रेस, राजामण्डी, **आगरा-2**
पुस्तक के सभी अधिकार	: श्रीमती शर्मिष्ठा शर्मा
पुस्तक प्राप्ति के पते	: 1. श्रीमती शर्मिष्ठा शर्मा ए-2 कमला नगर, आगरा-4 2. सचिन 'अमन' गिर्राज क्लॉथ हाउस, जैनगली, सिकन्दरा, आगरा-7

प्रकाशक

ऐवाने-'ख़्वाब'

कमला नगर, आगरा-4

यह सम्पूर्ण कृति

अपनी माँ को समर्पित, केवल अपनी माँ को

- जिसने जब मैं गर्भ में था तब विवेकानन्द, दयानन्द जैसे महानात्माओं द्वारा प्रदत्त ज्ञान का अध्ययन करके मुझे अदभुत विचार-संस्कार दिए.....

- जिसने बाल्यावस्था में अपने दुलार-फटकार से मुझे सत्यानुरागी बनाया.....

- जिसने किशोरावस्था में मुझे अनुशासन तथा समाज हित का ज्ञान कराया.....

- जिसने युवावस्था में विशेष शक्तिदायक तथा बुद्धिवर्धक आहार देकर, मुझे अदभुत दैविक-शक्ति* सम्पन्न बनाया.....

- जिसने आज तक मुझे उलाहनों तथा दण्ड द्वारा कर्तव्य पथ से च्युत नहीं होने दिया.....

- वास्तव में वह मेरी माँ ही है जिसने मुझे 'सत्यवादी' बनाया..... .....इस योग्य बनाया.....

सिर्फ़ मेरी माँ

15-9-94 — **'ख़्वाब' अकबराबादी**

(पूज्य माँ का जन्म-दिवस) — **आगरा-4**

ये शक्ति ही मुझे बताती है कि वर्ष 97 में नषशे नए० टी० देश के सर्वोच्च शासक बनेंगे भारत देश क्रान्ति व विश्व युद्ध के बाद विश्व में पुनः सर्वोच्च स्थिति प्राप्त करेगा जनता इस महान क्रान्तिकारी को ज़बरदस्त समर्थन देगी।

संसार में सर्वाधिक प्रिय

अपने भाई

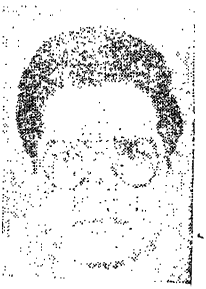

बबलू

के

नाम

विषय-सूची

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	वेद में छन्द का महत्व	8
2.	आत्मकथ्य	9–10
3.	विषय प्रवेश (परिभाषाएँ)	11–17
4.	नवछन्द नियम	18–23
5.	नवछन्द वर्णगणना	24–29
6.	नवछन्द में छन्दों का नामकरण तथा छन्द	30–57
7.	वर्तमान में छन्द प्रयोग	58–60
8.	रुबाई और रुबाई का छन्द विधान	61–63
9.	मन्थन	64–83
10.	"छन्द" कविता की आत्मा है	84–90
11.	देवनागरी	91–96

वेद में छन्द का महत्व

संसार का एक मात्र ज्ञान स्रोत, 'वेद' छन्दबद्ध हैं छन्दबद्ध होने के कारण ही वेद-ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता। वेद में छन्द का महत्व इस बात से पता चलता है कि कात्यायन के अनुसार—

यो हवा अविदितार्षेयच्छन्दोदैवतब्रह्मणेन मन्त्रेण याजयति वा अध्यापयति वा स्थाणुं वर्च्छति गर्तं वा पात्यते वा पापीयान भवति (सर्वानुक्रमणी 1-1)।

स्पष्ट है, जो व्यक्ति छन्द, देवता (मन्त्रों के देवता होते हैं) तथा ऋषि (वेद मन्त्रों के दृष्टा ऋषि होते हैं) को जाने बिना वेदाध्ययन या यज्ञादि कर्म) करता है वह व्यक्ति पाप का भागीदार होता है स्थान गर्त में जाता है।

छन्दांसि छादनात (7·19) यानी सम्पूर्ण सृष्टि ही एक छन्दोमयता की प्रतीक है। छन्दों से 'वेद' को गति मिलती है क्योंकि इस वेदांग की परिकल्पना वेदपुरुष के पादों के रूप में है।

वेद अध्ययन के लिए छः वेदांग बताए गए हैं—

तत्रापरा ऋग्वेदो, यजुर्वेदः, सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति। (मुण्डकोपनिषद 1-15)

स्पष्ट है शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष छः वेदांग होते हैं इन्हें जानकर ही वेद पढ़े जा सकते हैं।

पाणिनीय शिक्षा में 'वेदपुरुष' का वर्णन करते हुए उसके छः अंगों में उपर्युक्त सभी वेदांग उल्लिखित हैं तदनुसार **छन्द वेद पुरुष के पैर, कल्प हाथ, ज्योतिष नेत्र, निरुक्त कान, शिक्षा नासिका तथा व्याकरण मुख है।**

छन्दः पादौ तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोतमुच्यते ॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तत्मात् सङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥

आत्मकथ्य

कविता के गद्य बन जाने तथा नई शाइरी में त्रुटिपूर्ण अशआर की संख्या बढ़ जाने का मुख्य बल्कि एक मात्र कारण सम्बन्धित छन्दःशास्त्रों की दुरूहता है। वास्तव में हिन्दी (खड़ी बोली) में अवधी, बृज तथा संस्कृत छन्दों का प्रयोग किया जाना व्यावहारिक रूप में असफल ही कहा जाएगा क्योंकि इन छन्दों में पिरोई गई हिन्दी, भाषा-सौन्दर्य तथा सङ्गीत के मापदण्ड पर खरी नहीं उतरी अर्थात भाषा-सौन्दर्य तथा सङ्गीत दौनों ही की दृष्टि से हिन्दी कविता निर्धन रही क्योंकि अवधी, बृज तथा संस्कृत छन्द तथा छन्द नियम हिन्दी खड़ी बोली के पूर्णतः अनुकूल नहीं थे/हैं। अतः स्वाभाविक रूप से हिन्दी के अनेक कवियों ने उर्दू छन्दों (अर्बी-फ़ारसी) का प्रयोग कविता में किया किन्तु उर्दू छन्दों तथा छन्द नियमों से अपरिचित होने के कारण रचनाएँ प्रायः त्रुटिपूर्ण दिखाई पड़ती हैं। हिन्दी का अपना छन्दशास्त्र होना ही चाहिए। नवछन्द (अरूज़े-नौ) हिन्दी के लिए उपयुक्त छन्दःशास्त्र है।

वास्तव में हिन्दी को अर्बी-फ़ारसी शब्दों की बहुलता के साथ फ़ारसी लिपि में लिखे जाने पर 'उर्दू' कहते हैं। उर्दू भारतीय भाषा है इसकी आत्मा (व्याकरण) भारतीय (हिन्दी) है यही कारण है कि अनेक अर्बी-फ़ारसी छन्द तथा छन्द नियम उर्दू के लिए अनुपयोगी, बोझ तथा त्याज्य हो गए और वर्तमान में शाइरों ने उर्दू अरूज़ के अनेक नियमों की खुली अवहेलना आरम्भ करदी है। यह कड़वा सत्य उर्दू के छन्द-शास्त्रियों को मानना ही पड़ा है कि उर्दू यानी अर्बी-फ़ारसी अरूज़ में अनेक ख़ामियाँ हैं तथा अर्बी-फ़ारसी के सभी क़वाइद (नियम) उर्दू स्वीकार नहीं कर सकती। इस बात की पुष्टि उर्दू की वर्तमान शाइरी से हो जाती है जिसने अपने परिवेश को भारतीय बनाना शुरू कर दिया है। लेकिन शाइरों के इस प्रयास को क़दीम असातज़ा (पुराने बुज़ुर्ग उस्तादों) की कटु आलोचना का शिकार होना पड़ा है तथा उस पर 'ग़लत' होने का ठप्पा भी लग गया है।

वास्तव में युग की माँग के अनुरूप हुए परिवर्तन को पुराने नियमों के आधार पर अनुचित कहना अनुचित है। अतः नई आवश्यकताओं को मैंने नियम-रूप में "अरूज़े-नौ" (नवछन्द) में प्रस्तुत किया है।

'नवछन्द' यानी 'अरूज़े-नौ' हिन्दी तथा उर्दू ही के लिए नहीं बल्कि संसार की प्रत्येक भाषा के लिए पूर्णतः उपयुक्त है क्योंकि यह छन्दःशास्त्र ध्वनि पर आधारित है यानी दीर्घ स्वर व ह्रस्व स्वर के अनुसार वर्ण-गणना तथा लय-निर्धारण किया गया है। अगर आप अंग्रेज़ी जैसी सङ्गीत-हीन भाषा में लिखित इस रचना का 'नवछन्द' के अनुसार छन्द निर्धारण करना चाहें तो ये सम्भव है—

Twinkle Twinkle Little Star.

अंग्रेज़ी काव्य पंक्ति—टिव्किल टिव्किल लिटिल स्टार ॥

नवछन्द सूत्र—गनगन गनगन गनगन गान

नाम छन्द—त्रिगीतान

इस छन्द निर्धारण में ध्वनि ही मुख्य आधार है।

इसी प्रकार विश्व भर की भाषाओं की काव्य रचनाएँ नवछन्द के 'छन्दों' में समा जाएँगी।

अन्त में इस पुस्तक में प्रयुक्त भाषा के सम्बन्ध में, यह कहना चाहता हूँ कि भाषा को आम बोलचाल के क़रीब रखने का प्रयास किया गया है। विभिन्न परिभाषाओं में भी सरल संज्ञाओं का प्रयोग किया गया है। विषय को इतना संक्षिप्त कर दिया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति सरलता से अध्ययन की मनोस्थिति में आ जाता है। सत्य भी यही है कि छन्द तो सङ्गीत है प्राकृतिक नाद है इसमें दुरूहता हो ही नहीं सकती।

मेरी मान्यता है कि संसार में 'वेद' के अतिरिक्त कोई ज्ञान का स्रोत नहीं है। देवनागरी* मनुष्यकृत लिपि नहीं बल्कि देवताओं की लिपि है। संसार की सर्वश्रेष्ठ भाषा, देवभाषा संस्कृत के बाद 'हिन्दी' ही है, मुझे गर्व है कि मैं हिन्दी भाषी हूँ।

आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में

ख़्वाब अकबराबादी

कमला नगर, आगरा-4

---

*देखिए लेख : देवनागरी

नवछन्द (अ़रूज़े-नौ)

विषय प्रवेश

छन्दशास्त्र सम्बन्धी निम्न सरल परिभाषाएँ जानकर ही विषय को भली प्रकार समझा जा सकता है—

छन्दःशास्त्र—'छन्द' तथा छन्द नियमों का ज्ञान प्रदान करने वाले शास्त्र यानी पुस्तक को 'छन्दःशास्त्र' कहते हैं।

छन्द—किसी काव्य पंक्ति को सङ्गीतबद्ध यानी लयबद्ध यानी प्रवाहमान बनाने वाली व्यवस्था को **'छन्द'** कहते हैं। 'छन्द' कविता की आत्मा है।

कविता—विचारों की सङ्गीतबद्ध यानी लयबद्ध यानी छन्दबद्ध अभिव्यक्ति को 'कविता' कहते हैं।

वास्तव में विचारों की अभिव्यक्ति के दो माध्यम होते हैं 'गद्य' तथा 'पद्य'। 'पद्य' यानी काव्य। एक ही विचार के निम्न दो रूप देखिए—

1—मेरे दिल में
एक भोला भाला, प्यारा सा
निश्छल बच्चा रहता है
जो
बड़े आदमियों के
काले कारनामे देखकर
बड़ा होना
नहीं चाहता, शायद डरता है!!

इस भाव-रूप को कविता नहीं कह सकते यह अव्यवस्थित 'गद्य' मात्र है।

वास्तव में इस भाव या विचार का काव्य रूप यह होगा—

मिरे दिल के किसी कोने में इक मासूम सा बच्चा।
बड़ों की देखकर दुनिया बड़ा होने से डरता है॥

वास्तव में भावों या विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम एक ही है वो है भाषा, किन्तु भाषा के दो रूप होते हैं—

1. पद्य यानी काव्य यानी चेतन 2. गद्य यानी जड़ यानी अचेतन

गद्य को निर्जीव तथा पद्य को सजीव माना जाता है। पद्य को सजीव मानने का कारण है गति ! गति सजीव होने का प्रमुख लक्षण है निर्जीव में गति नहीं होती। एक ही भाषा में व्यक्त एक ही भाव के गद्य तथा पद्य दो रूप हो सकते हैं और यह बात सभी जन भली प्रकार जानते हैं कि पद्य में व्यक्त भाव शीघ्र स्मरणीय, तीव्र प्रभावकारी तथा आनन्द-दायक होता है। जिस प्रकार निर्जीव शरीर में प्राणों का प्रवेश होते ही वह गतिमान हो जाता है उसी प्रकार किसी भी भाव में छन्द रूपी प्राणों का प्रवेश होते ही वह भाव गतिमान तथा आनन्ददायक हो जाता है। काव्य को चेतन तथा गद्य को अचेतन मानने का कारण भी यही है कि भाषा का गद्य रूप गतिशील तथा प्रभावकारी नहीं होता यह हृदय पर ऐसा असर नहीं करता जैसा कि पद्य रूप असर करता है।

किसी भी बात को सङ्गीतबद्ध करके प्रस्तुत करना ही कविता करना है और भाषा को सङ्गीतबद्ध करने के लिए छन्दबद्ध किया जाता है यानी छन्दबद्धता और सङ्गीतबद्धता परस्पर पर्यायवाची हैं। 'वेद' को काव्य कहने का कारण मात्र वेद का छन्दबद्ध होना है। वेद 'अनुष्टुप" जाति के छन्दों में रचित हैं। ये छन्द 'वैदिक-छन्द' कहलाते हैं।

वास्तव में छन्द ही सम्पूर्ण सृष्टि का आधार है। हवा का चलना, नदी का बहना, दिन-रात, सूर्य-चन्द्र की गति, ब्रह्माण्ड, सब कुछ लय-बद्ध है अगर कहीं भी 'लय-भङ्ग' हो जाए तो सर्वनाश हो जाए। संसार एक लय में गतिशील है जब भी इस 'लय' में व्यवधान होता है तभी प्रलय होती है नाश होता है। संसार का सबसे बड़ा अपराध, महापाप 'लय-भङ्ग' करना ही है। यदि आप एक पौधे को उखाड़ते हैं या किसी जीव की हत्या करते हैं या प्रकृति-चक्र में बाधा उत्पन्न करते हैं तो ये 'लय-भङ्ग' का ही अपराध है और इसका परिणाम अन्ततः नाश ही होता है। किन्तु जिस प्रकार शरीर के नाश होने पर भी आत्मा का नाश नहीं होता उसी प्रकार सृष्टि भी नाश व प्रलय के बाद पुनः उसी लय में नर्तन करने लगती है।

कविता के लिए निश्चित नियम हैं इन नियमों द्वारा भाषा को सङ्गीतबद्ध बनाया जा सकता है। प्रत्येक काल में भाषा तथा सङ्गीत

बदलते रहते हैं तथा प्रत्येक भाषा का अपना प्रवाह तथा व्याकरण होता है।

हिन्दी, दीर्घकाल से अवधी, बृज तथा संस्कृत छन्दों तथा छन्द-नियमों का प्रयोग कर रही है और वर्तमान में तो हिन्दी ने उर्दू के छन्द तथा छन्द-नियम अपना लिए हैं मगर उर्दू तो ख़ुद अरबी-फ़ारसी छन्द तथा छन्द-नियमों का प्रयोग करती है। वास्तव में हिन्दी तथा उर्दू एक ही भाषा है अतः इन दोनों भाषाओं के लिए एक छन्दशास्त्र की आवश्यकता थी/है। हर नई चीज़ पुरानी की कोख से जन्म लेती है। "नवछन्द" के साथ भी ऐसा ही है। मेरे सामने, पिङ्गल (संस्कृत), अवधी, प्राकृत, अरबी-फ़ारसी, छन्द शास्त्र थे मैंने सभी से उपयोगिता तथा अपनी आवश्यकतानुसार सामग्री ग्रहण की है तथा संसार भर की भाषाओं के लिए ध्वनि-आधारित इस नवीनछन्दःशास्त्र "नवछन्द" की रचना की है।

वास्तव में ध्वनि यानी **'शब्द' ही ब्रह्म है, नाद ही सृष्टि का कारण है।*** मानव ने भी भावों की अभिव्यक्ति के लिए ध्वनि को माध्यम बनाया तथा ध्वनि ने ही भाषा का रूप ग्रहण किया, भाषा ने लिपि का रूप लिया और आरम्भ हुआ सुसंस्कृत जीवन। भाषा में विभिन्न ध्वनियों के लिए जिन प्रतीक चिह्नों का निर्माण हुआ उन्हें 'वर्ण'या 'अक्षर' कहते हैं। सङ्गीताचार्यों ने ध्वनि को द्रुत, ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत् नामक चार भागों में विभक्त किया है इसमें से दीर्घ तथा ह्रस्व छन्द का आधार हैं। वर्णों के दो रूप होते हैं 'दीर्घ' तथा 'लघु'। कोई भी 'लय' या सङ्गीत, ध्वनि यानी वर्णों के इन्हीं दो रूपों—1. लघु 2. दीर्घ से मिलकर बनता है।

लघु वर्ण—बिना मात्रा वाले या छोटी मात्रा वाले वर्ण को लघु वर्ण कहते हैं जैसे—अ, क, कि, सु, फ·····आदि। लघु वर्ण की ध्वनि ह्रस्व होती है इसे **एक मात्रा** (1) माना जाता है।

दीर्घ वर्ण—बड़ी मात्रा वाले वर्ण को दीर्घ वर्ण कहते हैं जैसे—आ, का, को, सी, से·····आदि। दीर्घ वर्ण को दो मात्रा (2) माना जाता है।

---

*नादेन व्यञ्जते वर्णः, पदं वर्णात्पदाद्वचः
वचसो व्यवहारोऽयं, नादाधीनं मतं जगत्।।

हलन्त वर्ण—जिस वर्ण की ध्वनि अपने से पूर्व आने वाले वर्ण की ध्वनि के साथ संयुक्त हो जाती है उस वर्ण को हलन्त वर्ण कहते हैं जैसे—शह्‌र में 'ह' वर्ण हलन्त है। निम्न तालिका को देखिए—

शब्द	हलन्त वर्ण	कुल मात्रा
अप्‌ना	प	2+2=4 मात्रा
जन्‌ता	न	2+2=4 मात्रा
झट्‌पट्‌	ट ट	2+2=4 मात्रा
चरम्‌	म	1+2=3 मात्रा
मुख्‌	ख	2 मात्रा
सत्‌	त	2 मात्रा

भाषा में वर्तमान समयानुसार आई तीव्रता ने शब्दों के उच्चारण बदल दिए हैं। यानी शब्दों में हलन्त वर्णों की संख्या बढ़ गई है।

हलन्त वर्ण अपने से पूर्व आने वाले अक्षर से संयुक्त होकर उस अक्षर को दीर्घ बना देते हैं यानी उपर्लिखित शब्दों में अप्‌, जन्‌, झट्‌, पट्‌, रम्‌, मुख्‌, सत्‌ एक दीर्घ वर्ण यानी 2 मात्रा माने जाएँगे।

आधा वर्ण—आधे वर्ण को उससे पूर्व आने वाले वर्ण के साथ संयुक्त माना जाता है तथा दौनों को मिलाकर एक दीर्घ वर्ण माना जाता है। जैसे - रस्ता, मस्त, सन्त, पक्का.....आदि। उपर्लिखित शब्दों में रस्‌, मस्‌, सन्‌, पक्‌, को 2 यानी दीर्घ वर्ण माना जाएगा।

विशेष—आत्मा, आस्था, रास्ता आदि शब्दों को संस्कृत काव्य वर्ण गणना में 2 दीर्घ माना जाएगा मगर हिन्दी तथा उर्दू में इन शब्दों का रूप निम्नवत्‌ होगा—

आत्मा=आ+त+मा=2 1 2 (5 मात्रा)
आस्था=आ+स+था=2 1 2 (5 मात्रा)
रास्ता=रा+स+ता=2 1 2 (5 मात्रा)
शिक्षा=शिक्‌+शा= 2 2 (4 मात्रा)

इन शब्दों के यही भार आज प्रचलित हैं उदाहरणार्थ—

(1) दयाकर दान विद्या का हमें परमात्मा देना—

भार—1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2=28 मात्रा

द या कर दा न विद् या का ह में पर मा त मा दे ना

उपर्लिखित वर्णों के विभिन्न प्रकार के क्रमों में एकत्रित होने पर विभिन्न छन्द बनते हैं, जैसे—

लघु=1, दीर्घ=2 लिखने पर कुछ वर्ण क्रम यूँ हो सकते हैं

(क) 1 2 1 2 2 1 2 1 2 2 =16 मात्राएँ

(ख) 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2 2=20 मात्राएँ

(ग) 2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2=20 मात्राएँ

(घ) 2 2 2 2 2 1 2 2 2 1 2 =19 मात्राएँ

विभिन्न छन्दों का भार तथा 'लय' भिन्न होती है।

भार—छन्द में प्रयुक्त कुल **मात्रा की संख्या** को छन्द का **भार** कहते हैं। भार किसी शब्द या शब्दों का भी हो सकता है। जैसे—

सप्ना=2+2=4 मात्रा भार

अनावश्यक=1+2+2+2=7 मात्रा भार

छोड़ जाने दे=2+1+2+2+2=9 मात्रा भार

एक ही भार वाले छन्दों की अनेक 'लय' हो सकती हैं।

लय—किसी भी छन्द की **उतार-चढ़ाव पूर्ण गति** को **'लय'** कहते हैं। उतार यानी लघुवर्ण (1) चढ़ाव यानी दीर्घ वर्ण (2)।

गति— किसी भी शब्द या वाक्य या पंक्ति के सरलता तथा प्रवाह-पूर्ण उच्चारण को 'गति' कहते हैं। वास्तव में भाषा में 'छन्द' के समावेश से भाषा की गति, बढ़ जाती है। **'गति' ही आनन्द का स्रोत है।** जिस प्रकार गतिमान तीर ही लक्ष्यवेध कर सकता है, उसी प्रकार गतियुक्त भाषा ही हृदय तक पहुँचती है। वास्तव में गति ही जीवन है, सृष्टि है आनन्द है। निम्न पंक्तियों को देखिए तथा **गति** के महत्व तथा **कारण** को समझिए—

1—सब इन्हें देखते हैं पर कौन गौर करता है ?

2—ज़रूर दुनिया में एक और भी दुनिया है ।

अब इन पंक्तियों का निम्न रूप देखिए—

1—देखते हैं सब इन्हें पर कौन करता ग़ौर है ?

भार—2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2

2—दुनिया में एक और भी दुनिया ज़रूर है ।

भार—2 2 1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2

छन्द के समावेश से वाक्यों को अद्‌भुत गति, सङ्गीत तथा लय की प्राप्ति हो गई है । जैसा कि पूर्व में आ चुका है कि जीवित प्राणि ही गति कर सकते हैं, मृत नहीं उसी प्रकार 'छन्दयुक्त' वाक्य ही गतिमान होता है गद्य नहीं ।

वास्तव में ज्ञान जब परम ज्ञान की स्थिति में पहुँचता है तो उसको मनुष्य निर्मित भाषाओं में समाहित करना असम्भव हो जाता है क्योंकि इन भाषाओं के शब्द तथा व्याकरण की सामर्थ्य समाप्त हो जाती है, चुक जाती है और मनुष्य पुनः **देवभाषा संस्कृत** को अपना लेता है तथा सम्पूर्ण ज्ञान **'वेद'** के रूप में व्यवस्थित दिखाई पड़ता है । वास्तव में **वेदज्ञान** के शनैः-शनैः लुप्त होने तथा पुनः प्रकट होने का क्रम ही सृष्टि-चक्र है । सम्पूर्ण सृष्टि की यह गति एक लय एक आवृत्ति, एक छन्द का पालन कर रही है । वास्तव में जीवन का एकमेव उद्‌देश्य परम आनन्द प्राप्त करना मात्र है । आनन्द प्राप्ति ही जीवन का उद्‌देश्य है । पृथ्वी पर स्थूल चीज़ों से भी आनन्द प्राप्ति का प्रयास सभी जीव व मनुष्य करते हैं । आवृत्ति यानी गति यानी छन्द आनन्द का स्रोत मात्र हैं ।

हवा का चलना, नदी का बहना, हृदय का धड़कना, सहवास क्रिया, ऋतु-परिवर्तन, बादलों की गड़गड़ाहट झूला-झूलना.....आदि सभी कुछ तो छन्द, गति तथा 'लय' के महत्व को प्रतिपादित कर रहे हैं । उपर्युक्त सभी की लय भङ्ग कर दी जाए यानी गति अवरुद्ध कर दी जाए तो क्या परिणाम होगा ? सब कुछ समाप्त हो जाएगा । प्रलय हो जाएगी । मगर आश्चर्य की बात यह है कि 'प्रलय' भी एक 'लय' में बँधी है, यानी 'लय' यानी 'छन्द' यानी 'सङ्गीत' से विलग कुछ भी नहीं है ।

यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि प्रत्येक गति यानी लय यानी सङ्गीत 'आवृत्ति' का रूप होता है यानी प्रत्येक गति में कहीं-कहीं नियम सङ्गत ठहराव होता है इस ठहराव या विराम को **'थम'** की संज्ञा नवछन्द में दी गई है।

थम—लय में कहीं तीव्र गति होती है, कहीं मध्यम गति होती है कहीं सुस्त गति होती है तो कहीं कुछ ठहराव होता है। इसी ठहराव या गति परिवर्तन के स्थान को **थम** कहते हैं। जैसे निम्न 'लय' को देखिए—

उदा०—इस पर न करो शङ्का, ये दोस्त हमारा है।

भार—2 2 1 1 2 2 2, 2 2 1 1 2 2 2

इस लय में 12वीं मात्रा पर ठहराव है इसे **'थम'** कहेंगे। इसी प्रकार विभिन्न छन्दों में विभिन्न स्थानों पर **'थम'** हो सकती है।

निम्न 'लयों' को देखिए—

उदा० 1—दिल जला रात भर, आपकी याद में, क्या करूँ क्या करूँ
2 1 2 2 1 2, 2 1 2 2 1 2, 2 1 2 2 1 2

इस लय में 10वीं मात्रा तथा 20वीं मात्रा पर 'थम' है।

उदा० 2—बेचैन मिरा दिल है, दिन रात मुहब्बत के, नग़मात सुनाता है
2 2 1 1 2 2 2, 2 2 1 1 2 2 2, 2 2 1 1 2 2 2

इस लय में 12वीं मात्रा तथा 24वीं मात्रा पर थम है।

किसी भी 'लय' में 'थम' के स्थान कवि-शाइर की इच्छा पर निर्भर हैं वह चाहे तो 20 मात्रा के छन्द में 10 स्थान पर 'थम' बना ले या एक भी स्थान पर 'थम' न हो। किन्तु प्रायः लयों में 'थम' का प्रयोग होता ही है। वास्तव में थम का स्थान परिवर्तित करके एक ही लय के अनेक नए रूप बनाए जा सकते हैं या विभिन्नता-नवीनता पैदा की जा सकती है।

□□

नवछन्द नियम

'नवछन्द' (अरूज़े-नौ) एक अति सरल प्राकृतिक छन्दःशास्त्र है अर्थात यदि आप लयबद्ध यानी सङ्गीतबद्ध रचनाएँ कर रहे हैं तो वह स्वतः 'नवछन्द' के छन्दों में समाहित हो जाएँगी—

1—वर्ण-गणना

'नवछन्द' में वर्णगणना के लिए शब्दों के उच्चारण को आधार माना गया है अर्थात—

जनता = 2 2 यानी दो दीर्घ वर्ण
ग़ज़ल् = 1 2 यानी 1 लघु वर्ण तथा 1 दीर्घ वर्ण
रफ़्तार = 2 2 1 यानी 2 दीर्घ 1 लघु वर्ण
आवश्यक = 2 2 2 यानी 3 दीर्घ वर्ण
अनुसार = 2 2 1 यानी 2 दीर्घ 1 लघु वर्ण
हल्चल् = 2 2 यानी 2 दीर्घ वर्ण
चम् चम् = 2 2 यानी 2 दीर्घ वर्ण

कारण—वर्तमान समय की तेज रफ्तार के कारण भाषा तथा उच्चारण में भी तीव्रता आई है अतः शब्दों में हलन्त वर्णों की संख्या बढ़ गई है।

2—लय हित

वास्तव में किसी भी वाक्य या काव्य पंक्ति में आए सभी दीर्घ वर्णों को दीर्घ ही उच्चारित नहीं किया जाता। भाषा के प्रवाह, उतार-चढ़ाव तथा भावों के अनुरूप अनेक दीर्घ स्वर भी लघु यानी ह्रस्व उच्चारित किए जाते हैं। अतः नवछन्द में दीर्घ वर्णों को 'लय-हित' का ध्यान रखते हुए अर्थात 'लय-भङ्ग' होने से बचाते हुए दीर्घ वर्ण को लघु उच्चारित करने व मानने का विधान है अर्थात—

(1) बस कर्म ही मनुष्य का कर्तव्य है यहाँ
भार—2 2 1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2
उपर्युक्त पंक्ति में 'का' को दीर्घ होते हुए भी ह्रस्व माना गया है।
(2) ख़ाली दिल का मकाँ है न आया करो
भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

उपर्युक्त पंक्ति में ख़ाली को 2, 1 भार पर लिया गया है यानी **ली** को ह्रस्व माना गया है।

(3) जब **मैं** अपनी भूल पर रोने लगा
भार—2 1 **2** 2 2 1 2 2 2 1 2

उपर्युक्त पंक्ति में '**मैं**' को दीर्घ होते हुए भी ह्रस्व माना गया है।
निम्न काव्य पंक्तियों की तुलना उनके भार से कीजिए—

(1) होता नहीं है मेरी समस्या का हल कहीं
भार—2 2 1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2

(2) ये मेरी बेबसी है कि उसका प्रभाव है
भार—2 2 1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2

(3) तुम लालिमा हो प्रात की, कोयल का गान हो
भार—2 2 1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2

(4) केश छाँओं में रहने के दिन आ गए
भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

(5) डरते-डरते सूर्य घर जाता है अब तो शाम को
भार—2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2

(6) निकल गया हो जो मतलब तो मित्रगण मेरे
भार—1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2 2 2

उपर्युक्त सभी काव्य पंक्तियाँ लय सङ्गीत तथा छन्द के अनुसार सही हैं, इन्हें गा सकते हैं, इन्हें सङ्गीत बद्ध कर सकते हैं। जबकि—

प्रथम पंक्ति में—**है, मेरी, का** को लघु माना गया है।
द्वितीय पंक्ति में—**मेरी, है** को लघु माना गया है।
तृतीय पंक्ति में—**हो, की, का** को लघु माना गया है।
चतुर्थ पंक्ति में— **में, के** को लघु माना गया है।
पञ्चम पंक्ति में— **डरते, है** को लघु माना गया है।
षष्ठम पंक्ति में— **हो, जो, तो** को लघु माना गया है।

अर्थात 'लयहित' का ध्यान रखते हुए आप विभिन्न शब्दों की अन्तिम मात्राएँ गिरा सकते हैं अर्थात दीर्घ को लघु मान सकते हैं। यह नियम पंक्ति में प्रयुक्त सभी शब्दों पर लागू होता है चाहे शब्द हिन्दी हो उर्दू हो, अरबी हो, फ़ारसी हो, अँग्रेज़ी हो या किसी अन्य भाषा का हो। 'लयहित' नियम कथ्य को व्यवस्थित रखने, तथा आसान बनाने में अति-2 सहायक है। वर्तमान काव्य सृजन में भाषा सौन्दर्य की रीढ़ इस नियम को ही जानना चाहिए।

कौन-कौन सी मात्राएँ गिरा सकते हैं—यानी किन-2 दीर्घ वर्णों को लघु माना जा सकता है? यह एक सरल बात है। निम्न मात्राएँ गिराई जा सकती हैं—

सभी शब्दों की अन्तिम मात्राएँ—सभी शब्दों की अन्तिम मात्राएँ बिना लय-भङ्ग किए गिराई जा सकती हैं। जैसे—

- ☐ का, की, सी, कू, रे, के, को·····की मात्राएँ गिर सकती हैं यानी इनका भार 2 के स्थान पर 1 माना जाएगा।
- ☐ रुका, रखी, तलू, रखे, रखो·····की मात्राएँ गिर सकती हैं यानी इनका भार 1, 2 के स्थान पर 1 1 (त+त) माना जाएगा।
- ☐ रहीं, रहें, गईं, रहूँ····की अन्तिम मात्राएँ गिर सकती हैं। भार 1 1 माना जाएगा।
- ☐ शाइरी, पेशानी, दोस्ती, ख़ाली, ज़ख़्मी·····की अन्तिम मात्राएँ गिर सकती हैं।
- ☐ मेरे (22) तेरे (22) कोई (22)·····जैसे शब्दों की दौनों मात्राएँ भी गिर सकती हैं। यानी इन शब्दों का भार बदल कर 1, 1 हो जाएगा।
- ☐ विसर्ग भी गिर सकते हैं। जैसे—ज़मानः, अतः, फ़सानः, गिलः···· का भार
- ☐ ज़मान=1 2 1, अत=1 1, फ़सान=1 21, गिल=1 1 भी हो सकता है।
- ☐ जिन्हें (12), तुम्हारा (122), कुम्हार (121), कुल्हाड़ी (122)···· जैसे शब्दों के आधे अक्षर पूर्व के अक्षर में न जुड़कर बाद वाले अक्षर में जुड़ेंगे।

कौन-कौन सी मात्राएँ नहीं गिरा सकते—लय बिगाड़ कर या शब्द को विकृत करके कोई भी मात्रा नहीं गिराई जा सकती है। इसके अतिरिक्त संज्ञा जैसे—सीता, रामू, शमा""आदि की अन्तिम मात्रा नहीं गिरा सकते। किसी भी शब्द के मध्य में आने वाली किसी मात्रा को नहीं गिरा सकते जैसे—रमेश, राजेश, नवेन्दु""की 'ए' की मात्रा।

जलील, रीत, बीन""की 'ई' की मात्रा।

राम, शाम, काम की 'आ' की मात्रा।

ओम, रोम, सोम""की 'ओ' की मात्रा।

फूल, शूल, चून""की 'ऊ' की मात्रा किसी भी तरह नहीं गिराई जा सकती हैं। ध्यान रहे इन निषिद्ध मात्राओं का 'लय' से अति क़रीब का रिश्ता है इनका गिरना हर हालत में 'लय' को बिगाड़ता है।

यदि अमर तथा देरपा यानी दीर्घकाल तक जीवित रहने वाली रचना करना चाहते हैं तो मात्राओं को 'लय' बिगाड़ कर कभी न गिराएँ यथा सम्भव प्रयास करें कि मात्राएँ कम से कम गिरानी पड़ें। मात्रा गिराना ज़रूरी नहीं है। आप चाहें तो बिना मात्रा गिराए भी सभी रचनाएँ कर सकते हैं किन्तु इससे भाषा दोष की सम्भावना हो जाती है।

3—सङ्गम

भाषा में प्रवाह हो तो बहुधा ऐसा होता है कि दो शब्द अपनी विशेष प्रकृति या संरचना के कारण स्वतः परस्पर मिल जाते हैं जैसे—

तुमको पाने की मन में जबिच्छा जगी

भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

(को, की, शब्द ह्रस्व उच्चारित होंगे व लघु माने जाएँगे)

उपर्युक्त पंक्ति में 'जब-इच्छा' शब्द मिलकर 'जबिच्छा' हो गए हैं। इस शब्द मिलन को 'सङ्गम' कहते हैं। सङ्गम की कुछ मिसालें निम्न हैं—

(1) इसी गली में इसी मकाँ में
इकुम्र अपनी गुज़र गई है॥

भार—1 2 1 2 2 1 2 1 2 2

यहाँ 'इक-उम्र' को 'इकुम्र' गिना जाएगा।

(2) मेरे अन्दर जो इकिन्सान रहा करता है
हाले-दुनिया से परेशान रहा करता है।
भार—2 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 2

यहाँ 'इक इन्सान' को इकिन्सान गिना जाएगा।

(3) इक पवित्रात्मा हो गई ज़िन्दगी
भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

यहाँ 'पवित्र-आत्मा' को 'पवित्रात्मा' गिना जाएगा।

(4) यौवनाया तो दिल ने कहा झूमकर
भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

यहाँ 'यौवन-आया' को यौवनाया गिना जाएगा।

संगम कहाँ होता है ?

जब किसी काव्य पंक्ति में दो ऐसे शब्द साथ-२ आ जाते हैं जिनमें पहले शब्द के अन्त में कोई बिना मात्रा वाला लघु वर्ण हो जैसे—गात, मन, चमन, सावन, आवश्यक.....आदि तथा दूसरे शब्द का पहला अक्षर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं में से कोई हो, तो यदि छन्द की आवश्यकता हो तो उन्हें जोड़ सकते हैं। सङ्गम से बने निम्न शब्द देखिए—

(1) सद+उपयोग=सदुपयोग
भार—2+2 2 1=1 2 2 1

(2) अन+आचार=अनाचार
भार—2+2 2 1=1 2 2 1

(3) शंङ्कर+आचार्य=शङ्कराचार्य
भार—2 2+2 2 1=2 1 2 2 1

(4) तद+उपरान्त=तदुपरान्त
भार—2+2 2 1=1 2 2 1

(5) आप+आए=आपाए

भार—2 1+2 2=2 2 2

'सङ्गम' का नियम पूर्णतः लय तथा प्रवाह पर निर्भर है अतः यः शाइर या कवि को पता भी नहीं चलता और सङ्गम हो जाता है। धुनिक काव्य सृजन के लिए यह नियम बहुत उपयोगी है।

अन्त में लघुवर्ण– नवछन्द के प्रत्येक छन्द में प्रभावी 'भार' के तिरिक्त अन्त में एक बिना मात्रा वाला लघु वर्ण आ सकता है। जैसे—

उदा०—आएगा कोई फिर आज रात ('त' वर्ण अतिरिक्त)

(1) **भार**—2 1 2 2 1 2 2 1 2 1

अन्त में आया 1 लघु वर्ण छन्द के प्रभावी भार के अतिरिक्त है।

उदा०—करो मत मुझे तुम परेशान ('न' वर्ण अतिरिक्त)

अन्त में 1 लघु वर्ण छन्द के प्रभावी भार के अतिरिक्त है।

नवछन्द—'नवछन्द में प्रत्येक छन्द को सिर्फ एक 'पंक्ति' माना गया है। संस्कृत की भाँति 4 चरण या उर्दू की भाँति 2 चरण नहीं। यानी

(क) **भार**—2 1 2 2 1 2 1 2 2 2 2 2=21

(ख) **भार**—2 1 2 2 1 1 2 2 2 2=17

(ग) **भार**—1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2=19

(घ) **भार**—1 2 2 2 2 1 2 2 2 2=18

उपर्युक्त सभी भार अलग-अलग छन्द हैं।

□□

नवछन्द-वर्णगणना

'नव छन्द' में अब तक प्रचलित वर्णगणना पद्धति को ही अधिक उपयोगी बनाते हुए नवीन रूप दिया गया है। वर्णों की जानकारी पूर्व में आ ही चुकी है। नवछन्द में **दीर्घ वर्ण** (2) को **गन्** कहा गया है तथा **लघु वर्ण** (1) को त कहा गया है। **नवछन्द के सूत्र मात्र से ही सम्बन्धित छन्द की लय, मात्राओं की कुल संख्या और छन्द का नाम स्वतः स्पष्ट हो जाता है। ऐसा प्रत्येक छन्द के साथ है।** कुछ शब्द तथा वाक्यों की वर्णगणना नवछन्द के अनुसार देखिए—

शब्द	नवछन्द सूत्र	मात्राओं की संख्या
मन	गन	2=2
सपन्	तगन	1+2=3
अपना	गनगन	2+2=4
रास्ता	गन तगन	2+1+2=5

यदि किसी शब्द में या वाक्य में **दो लघुवर्ण** एक साथ आते हैं तो उनके रूप त+त में पहला त बदल कर 'ति' लिखा जाएगा उदाहरणार्थ—

शब्द	नवछन्द सूत्र	मात्राओं की संख्या
रामलला	गन तितगन्	2+1+1+2=6
आज गए	गन तितगन्	2+1+1+2=6
यदि	तित	1+1=2
कि तुम्हें	तितगन्	1+1+2=4

मध्य में आने वाले दो लघु वर्णों त+त को **'त'** रूप में भी रख सकते हैं मगर इसके लिए पहले 'त' के पूर्व आने वाले 'गन' में 'त' को जोड़कर गन्त बना दें जैसे—

शब्द	नवछन्द सूत्र	मात्राओं की संख्या
रामलला	गन्त तगन	2+1+1+2=6
आज गए	गन्त तगन	2+1+1+2=6
हर बात बता	गन गन्त तगन्	2+2+1+1+2=8
यदि आज नहीं	तितगन्त तगन	1+1+2+1+1+2=8

अब इन सूत्र नियमों का विभिन्न छन्दों (दीर्घ-लघु वर्ण क्रम) में प्रयोग देखिए—

भार—2 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 2
छन्द सूत्र—गन तगन गन्त तगन गन्त तगन गन गन गन

भार—1 1 2 1 2 1 2 2 1 1 2 1 2 1 2 2
छन्द सूत्र—तितगन तगन तगन गन तितगन तगन तगन गन

भार— 2 1 2 2 1 1 2 2 2 2
छन्द सूत्र—गन तगन गन तितगन गन गन गन

भार— 2 1 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2
छन्द सूत्र—गन्त तगन गन्त तगन गन्त तगन गन

भार— 1 1 2 1 2 1 1 2 1 2
छन्द सूत्र—तितगन तगन तितगन तगन

भार—1 1 2 1 1 2 2 1 1 2 1 1 2 2 2
छन्द सूत्र—तितगन्त तगन गन गन तितगन्त तगन गन गन

सदैव स्मरणीय—

भार के अनुसार यदि दीर्घ वर्ण 2 से पहले लघु वर्ण 1 आए यानी 1+2 तो सूत्र को **'तगन्'** तथा यदि दीर्घ वर्ण के बाद लघु वर्ण आए यानी 2+1 तो सूत्र को **'गन्त'** कहते हैं। यदि आरम्भ में दो लघु वर्ण एक साथ आएँ यानी 1+1 तो सूत्र त+त का पहला 'त' बदल कर

'ति' हो जाता है जबकि मध्य में आने वाले त+त का पहला त चाहे तो 'ति' बनालें या उससे पूर्व आने वाले गन् में जोड़कर गन्त 2+1 बना लें ।

किसी भी छन्द भार के अन्त में आने वाले 2+1 भार यानी गन+त का 'त' वर्ण 'न' में तथा गन् वर्ण 'गा' में परिवर्तित हो जाएगा यानी गान हो जाएगा—

भार—2 1 2 2 1 2 1 2 2 2 1
छन्द सूत्र—गन तगन गन तगन तगन गन गान

भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 1
छन्द सूत्र—गन तगन गन तगन गन तगान

भार—2 1 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 1
छन्द सूत्र—गन्त तगन गन्त तगन गन्त तगान

उपर्युक्त सम्पूर्ण विवरण से 4 सूत्री 'नवछन्द वर्ण गणना' पद्धति निम्नवत् है—

(1) लघु वर्ण को **'त'** बोलते हैं जिसका भार 1 मात्रा है तथा दीर्घ वर्ण को **'गन्'** बोलते हैं जिसका भार 2 मात्रा है।

(2) 1+2 भार को **तगन** बोलते हैं तथा 2+1 भार को **'गन्त'** बोलते हैं ।

(3) आरम्भ में आने वाले दो लघुवर्णों यानी 1+1 भार यानी त+त में पहले 'त' को **'ति'** कर देते हैं यानी **ति+त** बोलते हैं। मध्य में आने वाले 2+1+1+2 भार यानी गन+त+त+गन को **'गन्त तगन'** रूप में बोलते हैं।

(4) अन्त में आने वाले 2 1 भार यानी गन+त को गा+न बोलते हैं। ये **तगान** या **गान** दो रूप में हो सकता है।

अब मैं पुनः विभिन्न शब्दों में **"नवछन्द"** की गणना पद्धति के ठीक रूप यानी सूत्र लिख रहा हूँ—

(1) हल्चल्=2 2 गन् गन्
(2) राजा=2 2 गन् गन्
(3) तितली=2 2 गन् गन्
(4) आत्मा=2 1 2 गन् तगन्
(5) परमात्मा=2 2 1 2 गन् गन् तगन्
(6) मधुर=1 2 तगन्
(7) जन्म=2 1 गन्त
(8) यार=2 1 गन्त
(9) आर्य=2 1 गन्त
(10) आज नहीं=2 1 1 2 गन्त तगन्
(11) शुरू=1 2 तगन्
(12) अमर=1 2 तगन्
(13) शुजा=1 2 तगन्
(14) शुआ=1 2 तगन्
(15) बरबाद=2 2 1 गन् गन्त
(16) इक बात सुनोगे=2 2 1 1 2 2 गन् गन्त तगन् गन्
(17) सुहाना सफ़र है=1 2 2 1 2 2 तगन् गन् तगन् गन्
(18) ऐश्वर्य=2 2 1 गन्गन्त

अब कुछ शब्द व पंक्तियाँ मात्रा गिराने के विधान सहित

(19) तुझे क्या सुनाऊँ=1 1 2 1 2 2 तितगन् तगन् गन्

(20) तेरे सामने मिरा हाल है=1 1 2 1 2 1 1 2 1 2
तितगन् तगन् तितगन् तगन्

(21) वैसे तो तुम्हीं ने मुझे बरबाद किया है
2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2
गन्गन्त तगन्गन्त् तगन्गन्त तगन्गन्

(22) किसी को चाहता हूँ जान से अधिक
1 2 1 21 21 2 1 212
तगन् तगन् तगन् तगन् तगन् तगन्

(23) छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए
2 1 2 2 12 21 2 212
गन्तगन् गन्तगन् गन्तगन् गन्तगन्

(24) हुज़ूरिस क़दर भी न इतरा के चलिए
1 2 2 1 22 1 22 1 2 2
तगन्गन् तगन्गन तगन्गन् तगन्गन्

('हुज़ूर-इस' को "सङ्गम" के कारण हुज़ूरिस पढ़ेंगे/बोलेंगे, ये स्वतः होगा)

विशेष—मात्रिक छन्दों को जाँचने के लिए केवल 'लय' पर निर्भर रहना पड़ता है अर्थात रचना की प्रत्येक पंक्ति में मात्राओं की संख्या समान होनी चाहिए तथा 'लय' एक ही होनी चाहिए यद्यपि वर्णक्रम बदल सकता है। आगे इसका **विस्तृत विवरण है।**

छन्द को जाँचने का तरीक़ा

किसी भी पंक्ति की छन्द व्यवस्था ठीक है या नहीं इसके लिए निम्न पद्धति प्रयोग में लाई जाती है। मान लीजिए निम्न पंक्ति की छन्द व्यवस्था जाँचनी है—

पंक्ति—हमारा दिल तुम्हारा हो गया है।

सर्वप्रथम लय में गुनगुनाते हुए इस पंक्ति के दीर्घ तथा ह्रस्व आवाज़ देने वाले वर्णों को पृथक-पृथक करना होगा यथा—

ह मा रा दिल् तु म्हा रा हो ग या है
भार—1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2=19 मात्रा
सूत्र—तगन गन गन तगन गन गन तगन गन
(नोट—1 लघु वर्ण तथा 2 दीर्घ वर्ण का प्रतीक है)

19 मात्रा के छन्द को नवछन्द में 'चतुर्गीतान' कहेंगे यदि **वर्ण क्रम** ...श्चित हो तो छन्द का नाम (नि) चतुर्गीतान होगा। पंक्ति में 1 भार के ...र लघु तथा 2 भार के ऊपर दीर्घ आ रहा है अतः पंक्ति सही है। एक ...दाहरण **और** देखिए—

पंक्ति—हमारा दिल तुम्हारा हो गया है।
हमें तुमसे शायद प्यार हुआ है ॥

प्रथम पंक्ति का भार—1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 है अब सभी ...क्तियाँ इसी लय व भार पर होनी चाहिए क्योंकि भार व वर्णक्रम से ...य' निश्चित होती है।

उपर्युक्त **शेर** की द्वितीय पंक्ति का पृथक्करण करने पर—

ह में तुम से शा यद प्या र हु आ है
भार—1 2 2 2 2 2 2 1 1 2 2=19 मात्रा

पंक्ति की लय बदलते हुए वर्ण क्रम बदल गया है अतः पंक्ति ग़लत ... पंक्ति यूँ होनी चाहिए—

हमें तुमसे हुआ है प्यार शायद
भार—1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2

मात्रा गिराने का प्रयोग इसी छन्द में देखिए—
पंक्ति—पहुँचकर आस्माँ पर मैंने देखा

प हुँच कर आ स माँ पर मैं ने दे खा
भार—1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2

यहाँ नियम सङ्गत रूप में 'ने' को दीर्घ होते हुए भी लघु गिना जा रहा है और इससे 'लय-भङ्ग' नहीं हो रही है। जिन वर्णों की मात्राएँ गिर सकती हैं उन्हें 1 के समान माना जा सकता है मगर जिन वर्णों की मात्राएँ नहीं गिर सकतीं उनको जाँचने के दौरान सदैव 2 भार के ऊपर ही आना चाहिए ऐसा न होने पर पंक्ति को ग़लत माना जाएगा।

□□

नवछन्द में छन्दों का नामकरण

'नवछन्द' में सभी छन्दों को दो प्रकार में बाँटा गया है—

1—**अरूज़ प्रकार**

2—**हिन्द प्रकार**

1—**अरूज़ प्रकार**—ये वो छन्द हैं जिनमें लघु (1) तथा दीर्घ (2) वर्णों का स्थान निश्चित होता है।

2—**हिन्द प्रकार**—ये वो छन्द हैं जो केवल मात्राओं के योग तथा 'लय' पर आधारित हैं। इनमें लघु-दीर्घ वर्णों का स्थान परिवर्तित हो सकता है। इनके नाम एक विशेष तथा निश्चित पद्धति के अनुसार रखे गए हैं तथा आप स्वयम् भी किसी भी छन्द का नाम व सूत्र बना सकते हैं।

'हिन्द प्रकार' के छन्दों का नामकरण—वास्तव में मात्रिक छन्द 'गीत' रचना के लिए उपयुक्त होते हैं। गीत, गेयता तथा लय पर्यायवाची हैं अतः 'हिन्द-प्रकार' छन्दों के नामकरण में 'गीत' शब्द का व्यापक प्रयोग है। 'गीत' को 'गन् गन्' (22) या (211) या (121) के बराबर यानी कुल 4 मात्रा के बराबर माना है। नवछन्द में 4 से कम मात्रा को छन्द नहीं माना है। अब यदि किसी छन्द में 4 मात्रा हैं तो उसका नाम होगा 'गीत-छन्द' यदि 5 मात्राएँ हैं तो छन्द का नाम होगा "गीतन" यदि 6 मात्राएँ हैं तो छन्द का नाम होगा गीता, यदि 7 मात्राएँ हैं तो छन्द का नाम होगा—गीतान।

अर्थात— **गीत=4 मात्रा, ा=2 मात्रा** तथा **न=1 मात्रा**

4 मात्रा=गीत छन्द

5 ,, =गीत 4+न 1=गीतन छन्द

6 ,, =गीत 4+ा 2=गीता छन्द

7 ,, =गीत 4+ा 2+न 1=गीतान छन्द

8 ,, =2×4 गीत=द्विगीत छन्द

9 मात्रा=2×4 गीत+न 1=द्विगीतन छन्द

10 ,, =2×4 गीत+ा 2=द्विगीता छन्द

11 ,, =2×4 गीत+ा 2+न 1=द्विगीतान छन्द

12 ,, =3×4 गीत=त्रिगीत छन्द

इसी आधार पर शेष नाम भी रखे गए हैं अर्थात्—

24 मात्रा=6×4 (गीत)=षष्टगीत छन्द

25 ,, =6×4 (गीत)+1 (न)=षष्टगीतन छन्द

26 ,, =6×4 (गीत)+2 (ा)=षष्टगीता छन्द

27 ,, =6×4 (गीत)+2 (ा)+1 (न)=षष्टगीतान छन्द

नामों की वैज्ञानिकता स्वयम्-सिद्ध है। अब यहाँ छन्दों के नामों की सूची प्रस्तुत की जाती है। इस सूची से प्रत्येक शेष शङ्का का भी निवारण हो जाएगा।

मात्राएँ	छन्द का नाम	छन्द सूत्र
4	गीत	गन गन
5	गीतन	गन गान
6	गीता	गन गन गन
7	गीतान	गन गन गान
8	द्विगीत	गन गन गन गन
9	द्विगीतन	गन गन गन गान
10	द्विगीता	गन गन गन गन गन
11	द्विगीतान	गन गन गन गन गान
12	त्रिगीत	गन गन गन गन गन गन
13	त्रिगीतन	गन गन गन गन गन गान
14	त्रिगीता	गन गन गन गन गन गन गन
15	त्रिगीतान	गन गन गन गन गन गन गान
16	चतुर्गीत	गन गन गन गन गन गन गन गन
17	चतुर्गीतन	गन गन गन गन गन गन गन गान

मात्रा	छन्द का नाम	छन्द सूत्र
18	चतुर्गीता	गन गन गन गन गन गन गन गन गन
19	चतुर्गीतान	8 बार गन अन्त में गान या मध्य में कहीं भी तगन
20	पञ्चगीत	10 बार गन
21	पञ्चगीतन	9 बार गन अन्त में गान या मध्य में कहीं भी तगन
22	पञ्चगीता	11 बार गन
23	पञ्चगीतान	10 बार गन अन्त में गान या मध्य में कहीं भी तगन
24	षष्टगीत	12 बार गन
25	षष्टगीतन	11 बार गन अन्त में गान या मध्य में कहीं भी तगन
26	षष्टगीता	13 बार गन
27	षष्टगीतान	12 बार गन अन्त में गान या मध्य में कहीं भी तगन
28	सप्तगीत	14 बार गन
29	सप्तगीतन	13 बार गन अन्त में गान या मध्य में कहीं भी तगन
30	सप्तगीता	15 बार गन
31	सप्तगीतान	14 बार गन अन्त में गान या मध्य में कहीं भी तगन
32	अष्टगीत	16 बार गन
33	अष्टगीतन	15 बार गन अन्त में गान या मध्य में कहीं भी तगन

उपर्युक्त मात्राओं वाले सभी छन्दों के उपर्लिखित सूत्रों के अतिरिक्त भी अनगिनत सूत्र हो सकते हैं। इसी प्रकार अन्य मात्राओं वाले छन्दों का नाम व सूत्र आप स्वयम् निर्धारित कर सकते हैं। इतना ही नहीं नवछन्द के प्रारूप में आप स्वयम् भी नवीन छन्दों का निर्माण कर सकते हैं तथा नाम रख सकते हैं। चूँकि सभी मात्राओं की संख्या वाले नाम 'नवछन्द' में हैं अतः आपके द्वारा बनाए गए छन्द का नाम तथा सूत्र दौनों ही 'नवछन्द' में आपको मिल जाएँगे।

"हिन्दप्रकार" छन्दों में मात्राएँ चाहे जिस क्रम में हो सकती हैं उदाहरणार्थ आप निम्न वर्णक्रम के भार वाले छन्दों का निर्माण करते हैं—

(क) 2 2 2 2 2 2 2=कुल भार 14 मात्रा

या

(ख) 2 1 1 2 2 1 1 2 2=कुल भार 14 मात्रा

या

(ग) 1 1 2 1 1 2 1 1 2 2=कुल भार 14 मात्रा

या

(घ) 2 1 2 1 2 2 2 2=कुल भार 14 मात्रा

उपर्युक्त सभी छन्दों का नाम 'त्रिगीता' ही होगा। यानी आपके द्वारा स्वनिर्मित छन्द नवछन्द में सम्मिलित हो जाएगा। वास्तव में हर कवि-शाइर पारम्परिक छन्दों-बहरों या लय से अलग हटकर बहुत सी मीठी तथा प्रवाहपूर्ण लयों में काव्य सृजन करता है किन्तु उसका यह सृजन अरूज़ या काव्य-नियमों का उल्लंघन माना जाता है। किन्तु अब 'नवछन्द' समर्थक पूरी तरह आज़ाद हैं कि वे स्वेच्छानुसार नवीन छन्दों का निर्माण करें। यहाँ एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि आप 'अरूज़-प्रकार' नवीन छन्द का निर्माण करते हैं अर्थात जिसमें लघु दीर्घ वर्णों का क्रम निश्चित हो तो उसके नामकरण के लिए आपको करना ये होगा कि अपने छन्द के समान बने **हिन्द प्रकार** छन्द के नाम के पहले कोष्ठक में **'निश्चित'** का प्रतीक रूप **(नि)** लिखेंगे। इससे छन्द जाँचने वाला समझ जाएगा कि छन्द में लघु-दीर्घ वर्णों का क्रम निश्चित है उदाहरण के लिए यदि आप निम्न छन्द बनाते हैं—

भार—1 1 2 1 1 2 1 1 2 2 2=16 मात्रा

सूत्र—तितगन तितगन तितगन गन गन

इस छन्द का हिन्द प्रकार नाम हुआ—**चतुर्गीत** तो आप इस नाम के पूर्व कोष्ठक में **(नि)** लिखेंगे। यानी नाम होगा **(नि) चतुर्गीत**।

किसी छन्द में मात्राएँ चाहे जिस क्रम में लगी हों, छन्द का नाम मात्राओं की संख्या यानी कुल भार के अनुरूप ही होगा। यदि छन्द में लघु दीर्घ वर्णों का क्रम निश्चित है अर्थात छन्द अरूज़ प्रकार है तो उसके नाम के पूर्व कोष्ठक में (नि) जुड़ जाएगा और यदि हिन्द प्रकार है तो मात्रा अनुरूप नाम ही पर्याप्त है।

शङ्का—यदि सभी समान मात्राओं वाले छन्दों को एक ही नाम दिया जाएगा तब तो एक ही रचना में अनेक 'लय' समाहित हो जाएँगी यानी

भार—2 1 1 2 2 2 2 1 2 1 2 2=20 मात्रा

और

भार—1 1 2 1 1 2 2 2 1 1 2 1 1 2=20 मात्रा

और

भार—1 2 1 1 2 1 2 2 1 2 1 2 2=20 मात्रा

यानी उपर्युक्त विभिन्न मात्रा क्रमों को एक ही रचना में प्रयोग करने पर 'लय-भङ्ग' का दोष तो उत्पन्न होगा ही, किन्तु वह छन्द 'चतुर्गीत' के अन्तर्गत होगा तथा नियम सङ्गत होगा। इस प्रकार तो 20 मात्रा की विभिन्न लयों के मध्य पहचान ही समाप्त हो जाएगी !!

निवारण—इस शङ्का में ही समाधान शामिल है। 'नवछन्द' में किसी भी रचना को जाँचने-परखने एक मात्र मापदण्ड **'लय'** है यानी 20 मात्रा की समान लय वाले विभिन्न वर्णक्रम वाले भार तो एक रचना में एक साथ प्रयोग किए जा सकते हैं किन्तु अलग लय वाला 20 मात्रा भार उस रचना में प्रयोग नहीं किया जा सकता अतः केवल पंक्ति में मात्राओं का योग करके समान मात्राओं को साथ-साथ प्रयोग करना ग़लत होगा। वस्तुतः 'लय' प्रधान तथा मात्राएँ **'गौण'** हैं 'लय' में बँधी मात्राएँ स्वतः अपने स्थान पर आएँगी जबकि निश्चित मात्राओं की लय निश्चित नहीं होती। लघु-दीर्घ वर्णों के क्रम में नियमसङ्गत परिवर्तन तो 'लय' में खप जाता है मगर नियम विरुद्ध परिवर्तन 'लय-भङ्ग' या लय-परिवर्तन का कारण होता है। अतः किसी भी रचना को जाँचने-परखने के लिए उसकी प्रथम पंक्ति की लय को आधार बनाया जाएगा तथा उस निर्धारित लय का पालन न करने वाली पंक्तियाँ ग़लत तथा छन्द से बाहर मानी जाएँगी। उदाहरणार्थ—

सर्दी का मौसम आया है (प्रथम पंक्ति)
भार—2 2 2 2 2 2 2 2=कुल 16 मात्रा

हसीन रंग के फूल लेकर ।। (द्वितीय पंक्ति)
भार—1 2 1 2 1 2 2 1 2 2=कुल 16 मात्रा

दौनों पंक्तियों की 'लय' अलग-2 है। विभिन्न लयों में पढ़ने पर भी दौनों पंक्तियों में कोई समान लय नहीं प्राप्त हुई अतः इसे लय-भङ्ग के कारण छन्द से बाहर यानी ग़लत माना जाएगा—इसे यूँ कर देने पर लय सही हो जाएगी—

सर्दी का मौसम आया है
भार—2 2 2 2 2 2 2 2

लेकर साथ हसीन गुलों को
भार—2 2 2 1 1 2 1 1 2 2

यानी भिन्न-भिन्न भारों यानी लघु दीर्घ वर्णों के भिन्न-भिन्न क्रमों में समान 'लय' भी होती है।

शङ्का—फिर सही ग़लत का निश्चित फ़ैसला कैसे हो ?

निवारण—केवल छन्द की **लय** ही सही ग़लत का फ़ैसला कर सकती है। प्रत्येक कवि-शाइर को 'लय' का ध्यान रखना चाहिए लय के अनुरूप मात्राएँ तो स्वतः आती हैं मगर मात्राओं का योग पूरा कर देने मात्र से अभीष्ट 'लय' की प्राप्ति **सदैव** सम्भव नहीं होती। उदाहरणार्थ निम्न पंक्तियों को देखिए ये विभिन्न वर्णक्रम हैं मगर समान भार तथा **लय** का वहन करके **लय** के महत्व को प्रतिपादित कर रही हैं—

नहीं खींचते हम रेखाएँ केवल राह बताते हैं
भार—1 2 2 1 2 2 2 2 2 2 2 2 1 1 2 2 2=30

बहके हुए विचारों का हम ठीक बिन्दु पर लाते हैं।
भार—2 2 1 **2** 1 2 2 2 2 **2** 1 2 1 2 2 2 2=30

(छन्द-सप्तगीता) अर्थात विभिन्न वर्णक्रम एक 'लय' में हो सकते हैं।

अरूज़ प्रकार छन्द

सत्य तो यह है कि **'अरूज़ प्रकार'** के सभी छन्द **हिन्द प्रकार** के छन्दों में समाहित हैं तथापि **'अरूज़ प्रकार'** के छन्दों के अनेक मीठे, प्रवाहपूर्ण तथा लोकप्रिय 'लय' अब तक खोजे जा चुके हैं। इन लयों में रचनाएँ प्रायः मिल जाएँगी अतः इन सभी लयों को नवछन्द में अतिरिक्त

नाम भी दिए गए हैं यानी प्रत्येक अरूज़ प्रकार छन्द के दो नाम हैं एक नाम उसका मूल तथा वैज्ञानिक नाम है जो **'हिन्द प्रकार'** नाम है तथा दूसरा उसका वह नाम है जो उसकी वर्तमान पहचान तथा उपस्थिति के कारण उसे दिया गया है। अब तक खोजे गए 'अरूज़ प्रकार' के लोकप्रिय छन्दों यानी लयों यानी वर्णक्रमों यानी लोकप्रिय-कर्णप्रिय धुनों को नवछन्द के अनुसार यहाँ दर्ज किया जा रहा है। प्रत्येक छन्द को प्रस्तुत करने के लिए निम्न पद्धति का प्रयोग किया गया है—

(1) पहली पंक्ति में—छन्द का नाम फिर कोष्ठक में उसका वैज्ञानिक नाम

(2) दूसरी पंक्ति में—लघु-दीर्घ वर्णों के क्रम सहित छन्द का भार

(3) तीसरी पंक्ति में—छन्द का छन्द सूत्र

(4) चौथी पंक्ति में—उदाहरण की ऐसी पंक्ति जिसमें कोई मात्रा नहीं गिरी है

(5) पाँचवीं पंक्ति में—मात्रा गिराते हुए उदाहरण

अरूज़-प्रकार छन्द—

1. **छन्द कमल** [(नि) द्विगीतन मात्रा]

भार—2 2 2 1 2 =9
सूत्र—गन गन गन तगन
उदा०—बादल छा गए
उदा०—मीठी बातें हैं

2. **छन्द पूजा** [(नि) द्विगीतन मात्रा]

भार—1 2 1 1 **2** 2 =9
सूत्र—तगन्त तगन गन
उदा०—क़रार मिला है
उदा०— **जो राहें मिली हैं**

3—छन्द रईस—[(नि) द्विगीतन 9 मात्रा]

भार—2 1 2 2 2 =9

सूत्र—गन तगन गन गन

उदा०—खो गए हम भी

उदा०—हमसे मत उलझो

4—छन्द ज़फ़र—[(नि) द्विगीता 10 मात्रा]

भार—2 2 2 2 2 =10

सूत्र—गन गन गन गन गन

उदा०—ऐ दिल मत घबरा

उदा०—साजन आएँगे

5. छन्द मृग—[(नि) द्विगीता 10 मात्रा]

भार—2 2 1 2 1 2 =10

सूत्र—गन गन तगन तगन

उदा०—कोई गिला नहीं

उदा०—दिलबर की बात से

6. छन्द अदम—[(नि) द्विगीतान मात्रा]

भार—2 2 2 2 1 2 =11

सूत्र—गन गन गन गन तगन

उदा०—सड़कों पर आ गए

उदा०—कैसे समझाऊँ मैं

7—छन्द पलाश—[(नि) द्विगीतान 11 मात्रा]

भार—2 2 1 2 2 2 =11

सूत्र—गन गन तगन गन गन

उदा०—मत कह बुरा हमको

उदा०—मोती से ये आँसू

8—**छन्द तेज**—[(नि) त्रिगीत 12 मात्रा]

भार—1 2 2 2 1 2 2 =12

सूत्र—तगन गन गन तगन गन

उदा०—तुम्हारा प्यार पाकर

उदा०—पुरानी बातें होंगी

9—**छन्द सलीस**—[(नि) त्रिगीत 12 मात्रा]

भार—2 1 2 1 1 2 1 2 =12

सूत्र—गन तगन तितगन तगन

उदा०—हाय राम ग़जब हुआ

उदा०—क्या ख़याल है आपका

10—**छन्द बहार**—[(नि) त्रिगीत 12 मात्रा]

भार—1 1 2 1 2 2 1 2 =12

सूत्र—तितगन तगन गन तगन

उदा०—यदि आप हैं साथ तो

उदा० मेरा दिल है अब आपका

11—**छन्द चमेली**—[(नि) त्रिगीत 12 मात्रा]

भार—2 2 2 2 2 2 =12

सूत्र—गन गन गन गन गन गन

उदा०—किसने किसको मारा

उदा०—अब हम क्या बतलाएँ

12—**छन्द सहज**—[(नि) त्रिगीता 14 मात्रा]

भार—2 2 1 2 1 1 2 1 2 =14

सूत्र—गन गन तगन तितगन तगन

उदा०—क्यों राह में गतिरोध है

उदा०—ख़ुद खो गए **तेरी** खोज में

13—**छन्द मेल**—[नि) त्रिगीता 14 मात्रा]
भार—1 1 2 1 **2** 2 2 1 2 =14
सूत्र—तितगन तगन गन गन तगन
उदा०—यदि आपके मन में नहीं
उदा०—तुझे क्या बताऊँ हम सफ़र ?

14—**छन्द महोप**—[(नि) त्रिगीता 14 मात्रा]
भार—2 2 1 2 1 2 2 2
सूत्र—गन गन तगन तगन गन गन
उदा०—दिल तो कहीं लगाना है
उदा०—हम कैसे राज़ बतलाएँ

15—**छन्द शोख़**—[(नि) त्रिगीता 14 मात्रा]
भार—1 2 **2** 2 2 2 1 2 =14
सूत्र—तगन गन गन गन गन तगन
उदा०—तुम्हारे दिल में ख़ौफ़ है
उदा०—मैं तुमको कैसे पाऊँगा

6—**छन्द विटप**—[(नि) त्रिगीता 14 मात्रा]
भार—2 1 2 **2** 2 2 1 2 =14
सूत्र—गन तगन गन गन गन तगन
उदा०—आज कल हमसे हैं ख़फ़ा
उदा०—राहें कितनी भी सख़्त हों

7—**छन्द मधु**—[(नि) त्रिगीता 14 मात्रा]
भार—2 2 1 2 2 1 2 2 =14
सूत्र—गन गन तगन गन तगन गन
उदा०—देखो मुझे प्यार से तुम
उदा०—राहों में तेरी खड़े हैं

18—छन्द अलम—[(नि) त्रिगीतान 15 मात्रा]
भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 =15
सूत्र—गन तगन गन तगन गन तगन
उदा० चाँद की चाँदनी खो गई
उदा०—पास मञ्ज़िल के मौत आ गई

19—छन्द तीव्र—[(नि) त्रिगीतान 15 मात्रा]
भार—1 2 2 2 1 1 2 2 2 =15
सूत्र—तगन गन गन्त तगनगन गन
उदा०—तुम्हारा प्यार सनम झूठा
उदा०—क़सम खाती हो सदा झूठी

20—छन्द प्रकाश—[(नि) त्रिगीतान 15 मात्रा]
भार—1 2 2 2 2 2 2 2 =15
सूत्र—तगन गन गन गन गन गन गन
उदा०—तुम्हारी बातें दिलकश हैं
उदा०—मेरे मन मन्दिर में हो तुम

21—छन्द रवाँ—[(नि) चतुर्गीत 16 मात्रा]
भार—1 2 1 2 2 1 2 1 2 2 =16
सूत्र—तगन तगन गन तगन तगन गन
उदा०—हज़ार बातें कहे ज़माना
उदा०—नसीब में जिसके जो लिखा था

22—छन्द प्रसून—[(नि) चतुर्गीत 16 मात्रा]
भार—2 1 2 2 1 2 2 2 2 =16
सूत्र—गन तगन गन तगन गन गन गन
उदा०—हम तुम्हें चाहते हैं ऐसे
उदा०—दिल में सूरत तुम्हारी ही है

23—छन्द प्रभा—[(नि) चतुर्गीत 16 मात्रा]
भार—2 1 2 2 2 1 2 2 2 =16
सूत्र—गन तगन गन गन तगन गन गन
उदा०—जी रहा हूँ मैं दुखी होकर
उदा०—सबके जीवन की कहानी है

24—छन्द हसीन—[(नि) चतुर्गीत 16 मात्रा]
भार—1 2 1 2 1 2 1 2 2 2 =16
सूत्र—तगन तगन तगन तगन गन गन
उदा०—बुरी निगाह से बचा है दिल
उदा०—चुरा के दिल मेरा न जाओ तुम

25—छन्द शरद—[(नि) चतुर्गीत 16 मात्रा]
भार—2 1 1 2 2 2 1 1 2 2 =16
सूत्र—गन्त तगन गन गन्त तगन गन
उदा०—आए हमेशा याद तुम्हारी
उदा०—हमको मुहब्बत हो गई तुमसे

26—छन्द फ़लक—[(नि) चतुर्गीत 16 मात्रा]
भार—2 1 1 2 2 1 2 1 2 2 =16
सूत्र—गन्त तगन गन तगन तगन गन
उदा०—कौन हमारी व्यथा सुनेगा
उदा०—मित्र हमारा नहीं है कोई

27—छन्द कनक—[(नि) चतुर्गीत 16 मात्रा]
भार—2 2 2 2 2 2 2 2 =16
सूत्र—गन गन गन गन गन गन गन गन
उदा०—सबसे ऊपर वह ईश्वर है
उदा०—तेरी लीला तू ही जाने

28—**छन्द हेम**— [(नि) चतुर्गीत 16 मात्रा]

भार—1 2 1 2 2 2 2 2 2 =16

सूत्र—तगन तगन गन गन गन गन गन

उदा०—कभी तुम्हें चाहा था दिल ने

उदा०—हमारे दिल में तुम रहते हो

29—**छन्द त्रोटक**—[(नि) पञ्चगीता 16 मात्रा]

भार—2 2 1 1 2 2 2 2 2 =16

सूत्र—गन गन्त तगन गन गन गन गन

उदा०—यह प्रेम सरोवर का जल है

उदा०—इस दिल में तुम्हारी चाहत है

30—**छन्द चम्पा**—[(नि) चतुर्गीत 16 मात्रा]

भार—2 1 1 2 2 2 2 2 2 =16

सूत्र—गन्त तगन गन गन गन गन गन

उदा०—खून सड़क पर क्यों बिखरा है

उदा०—कोई नहीं है किससे पूछें

31—**छन्द जल्दी**—[(नि) चतुर्गीत 16 मात्रा]

भार—2 2 2 2 1 2 1 2 2 =16

सूत्र—गन गन गन गन तगन तगन गन

उदा०—रक्खो सबसे सदा बनाकर

उदा—मैं तेरे दिल में ही रहूँगा

32- **छन्द शौक़**—[(नि) चतुर्गीतन 17 मात्रा]

भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 =17

सूत्र—गन तगन गन तगन गन तगन गन

उदा०—ख़ुश्बुओं से महकता चमन है

उदा०—कितना प्यारा हमारा वतन है

33—**छन्द बरखा**—[(नि) चतुर्गीतन 17 मात्रा]

भार—2 1 2 2 1 1 2 2 2 2 =17

सूत्र—गन तगन गन्त तगन गन गन गन

उदा०—एक इन्सान नज़र आया है

उदा०—यह तेरी आँख का धोका होगा

34—**छन्द मधुर**—[(नि) चतुर्गीतन 17 मात्रा]

भार—2 1 2 2 1 2 1 2 2 2 =17

सूत्र—गन तगन गन तगन तगन गन गन

उदा०—मुस्कुराना बहुत ज़रूरी है

उदा०—ऐसी चादर को कौन लेगा अब

35—**छन्द सफ़र**—[(नि) चतुर्गीतन मात्रा]

भार—2 2 1 1 2 2 2 1 2 2 =17

सूत्र—गन गन्त तगन गन गन तगन गन

उदा०—ऐ दोस्त हमारी बात सुन ले

उदा०—हाँ ! आहें भरेगा कोई कब तक

36—**छन्द सर्पी**—[(नि) चतुर्गीता 18 मात्रा]

भार—1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2 = 18

सूत्र—तगन गन तगन गन तगन गन तगन

उदा०—सदा प्रेम के गीत गाता रहा

उदा०—वफ़ा जिनसे की बेवफ़ा हो गए

37—**छन्द जोश**—[(नि) चतुर्गीता 18 मात्रा]

भार—1 2 2 2 2 1 2 2 2 2 =18

सूत्र—तगन गन गन गन तगन गन गन गन

उदा०—तुम्हारा चहरा गुलाबों सा है

उदा०—तुम्हारी आँखें हैं मय का सागर

38—**छन्द निशा**—[(नि) चतुर्गीता 18 मात्रा]

भार—2 1 2 2 2 **2** 1 2 2 2 =18

सूत्र—गन तगन गन गन गन तगन गन गन

उदा०—**प्यार** है हमसे ? बोलिए कुछ तो

उदा०—हमने तुमको देखा है पहले भी

39—**छन्द सुरस**—[(नि) चतुर्गीता 18 मात्रा]

भार—1 2 1 **2** 1 2 1 2 1 2 1 2 =18

सूत्र—**तगन** तगन तगन तगन तगन तगन

उदा०—अतीत की हरेक बात याद है

उदा०—तुम्हें कभी हमारी याद आएगी

40—**छन्द असीर**—[(नि) चतुर्गीता 18 मात्रा]

भार—2 1 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 =18

सूत्र—गन्त तगन गन्त तगन गन्त तगन

उदा०—**छोड़िए अब** ! रात गई बात गई

उदा०—**तुमसे** सहारे की नहीं आस मुझे

41—**छन्द नसीर**—[(नि) चतुर्गीता 18 मात्रा]

भार—**2** 1 1 **2 2** 1 1 2 **2** 2 2 =18

सूत्र—गन्त तगन गन्त तगन गन गन गन

उदा०—आज हमारे लिए गाओगे तुम

उदा०—दिल **के** जहाँ में **भी** अँधेरा छाया

42—**छन्द अरशद**— [(नि) चतुर्गीता 18 मात्रा]

भार—2 2 2 2 2 2 2 2 2 =18

सूत्र—गन गन गन गन गन गन गन गन गन

उदा०—किसके डर से सब सहमे से हैं

उदा०—किसके डर से बस्ती सूनी है

43—**छन्द गुल**—[(नि) चतुर्गीतान 19 मात्रा]
भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 2 =19
सूत्र—गन तगन गन तगन गन तगन गन गन
उदा०—द्वार पर देखिए कौन आया है
उदा०—हमको तुमसे हुई है मुहब्बत यार

44—**छन्द खण्डित**—[(नि) चतुर्गीतान 19 मात्रा]
भार—1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2=19
सूत्र—तगन गन गन तगन गन गन तगन गन
उदा०—उधर ही तीर छोड़ा जा रहा है
उदा०—दिखाते हैं जो चहरों की हक़ीक़त

45—**छन्द रमल**—[(नि) चतुर्गीतान 19 मात्रा]
भार—2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 =19
सूत्र—गन तगन गन गन तगन गन गन तगन
उदा०—हर सुमन पतझार का आहार है
उदा०—आपके पहलू में आकर रो दिए

46—**छन्द लहर**—[(नि) चतुर्गीतान 19 मात्रा]
भार—2 1 2 2 1 2 2 2 1 2 2 =19
सूत्र—गन तगन गन तगन गन गन तगन गन
उदा०—मैं तुम्हें ये बताना चाहता हूँ
उदा०—हमको तुमसे मुहब्बत हो गई है

47—**छन्द सर्प**—[(नि) पञ्चगीत 20 मात्रा]
भार—1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 =20
सूत्र—तगन गन तगन गन तगन गन तगन गन
उदा०—जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
उदा०—ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है

48—**छन्द त्रिग्वणी**—[(नि) पञ्चगीत 20 मात्रा]
भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2 =20
सूत्र—गन तगन गन तगन गन तगन गन तगन
उदा०—एक पवित्रात्मा हो गई ज़िन्दगी
उदा०—चाँद मिलता नहीं सबको संसार में

49—**छन्द मजीद**—[(नि) पञ्चगीत 20 मात्रा]
भार—2 1 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 =20
सूत्र—गन्त तगन गन्त तगन गन्त तगन गन
उदा०—दोस्त मुझे आज बहुत प्यार करो तुम
उदा०—आज हक़ीक़त से मेरी आँख मिली है

50—**छन्द शिव**—[(नि) पञ्चगीत 20 मात्रा]
भार—2 1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2=20
सूत्र—गन तगन तगन्त तगन गन तगन तगन
उदा०—आज आपके लिए गुलशन सजाएँगे
उदा०—चौधवीं का चाँद हो या आफ़ताब हो

51—**छन्द रोजी**—[(नि) पञ्चगीत 20 मात्रा]
भार—2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 2 =20
सूत्र—गन गन तगन गन गन तगन गन गन गन
उदा०—दिलबर कहीं हमको मिले प्यारा सा
उदा०—कैसे जिएँ बस आहें भर भर कर हम

52—**छन्द वंश**—[(नि) पञ्चगीत 20 मात्रा]
भार—2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 =20
सूत्र—गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन
उदा०—तुमसे मिल कर दिल खुश खुश रहता है
उदा०—कितनी प्यारी हैं तेरी दो आँखें

53—**छन्द मृदु**—[(नि) पञ्चगीतन 21 मात्रा]
भार—1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 =21
सूत्र—तगन गन गन तगन गन गन तगन गन गन
उदा०—सभी आदर्श की बातें हुईं विस्मृत
उदा०—सभी करते हैं बातें दिल दुखाने की

54—**छन्द सरली** - [(नि) पञ्चगीतन 21 मात्रा]
भार—2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 1 2 2 =21
सूत्र—गन तगन गन गन तगन गन गन तगन गन
उदा०—कर रहा हूँ ईश से आराधनाएँ
उदा०—मेरी सब इच्छाएँ पूरी हो गई हैं

55—**छन्द फ़ारस**—[(नि) पञ्चगीतन 21 मात्रा]
भार—2 1 2 2 2 1 2 2 2 2 1 2 =21
सूत्र—गन तगन गन गन तगन गन गन गन तगन
उदा०—बोल राधा बोल तूने ये क्या किया
उदा०—बात अपने दिल की तू हमसे पूछ ले

56—**छन्द बफ़ा**—[(नि) पञ्चगीतन 21 मात्रा]
भार—1 2 1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2=21
सूत्र—तगन तगन तगन्त तगन गन तगन तगन
उदा०—हुज़ूर आज रात कहीं जाइए नहीं
उदा० | हमारा ख़्वाब टूटने का तुम न ग़म करो

57—**छन्द प्रियम**—[(नि) पञ्चगीतन 21 मात्रा]
भार—1 1 2 1 2 1 1 2 1 2 1 1 2 1 2 =21
सूत्र—तितगन तगन तितगन तगन तितगन तगन
उदा०—न हमें ख़बर न तुम्हें ख़बर हुई, दिन ढला
उदा०—मेरी ज़िन्दगी मिरी जुस्तजू तेरा प्यार है

58—**छन्द कीर्ति**—[(नि) पञ्चगीतन 21 मात्रा]

भार—2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 =21

सूत्र—गन गन तगन गन गन तगन गन गन तगन

उदा०—नव वर्ष की शुभकामनाएँ लीजिए

उदा०—हम यूँ ही चलते चलते तुझ तक तक आ गए

59—**छन्द समान**—[(नि) पञ्चगीता 22 मात्रा]

भार—2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 =22

सूत्र—गन गन्त तगन गन्त तगन गन्त तगन गन

उदा०—तू हिन्दु बनेगा न मुसलमान बनेगा

उदा०—हम एक थे हम एक हैं हम एक रहेंगे

60—**छन्द सुमीत**—[(नि) पञ्चगीता 22 मात्रा]

भार—2 1 2 1 2 1 2 2 1 2 1 2 1 2 =22

सूत्र—गन तगन तगन तगन गन तगन तगन तगन

उदा०—रात हो गई मगर बात हो नहीं सकी

उदा०—शोख रङ्ग दब गए कालिमा सी छा गई

61—**छन्द आम**—[(नि) पञ्चगीता 22 मात्रा]

भार—2 2 1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2 =22

सूत्र—गन गन तगन तगन तितगन गन तगन तगन

उदा०—चिन्तित कभी न होइए निष्कर्ष के लिए

उदा०—मिलती है ज़िन्दगी में मुहब्बत कभी कभी

62—**छन्द प्रायः**—[(नि) पञ्चगीता 22 मात्रा]

भार—2 2 1 2 1 2 1 1 2 2 1 1 2 1 2 =22

सूत्र—गन गन तगन तगन तितगन गन्त तगन गन

उदा०—कोई दरख्त फूल व फलदार नहीं है

उदा०—क्यों फेंकते हो पढ़के ये अखबार नहीं है

63—छन्द मगन—[(नि) पञ्चगीता 22 मात्रा]
भार—2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 1 2 1 2 =22
सूत्र—गन गन्त तगन गन्त तगन गन तगन तगन
उदा०—बस आप अभी साथ हमारे न आइए
उदा०—लोगों में इसी बात का रोना बना रहा

64—छन्द जमील—[(नि) पञ्चगीता 22 मात्रा]
भार—2 2 1 1 2 2 1 2 1 2 1 2 1 2 =22
सूत्र—गन गन्त तगन गन तगन तगन तगन तगन
उदा०—फिर आज वही बात याद आ गई सनम
उदा०—हर रात मिरे यार याद आएगी तिरी

65—छन्द लतीफ़—[(नि) पञ्चगीता 22 मात्रा]
भार—1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2 2 2 =22
सूत्र—तगन तगन तितगन गन तगन तगन गन गन
उदा०—हरेक राह लहू से रँगी दिखाई दी
उदा०—हरेक शख्स को मुझसे शिकायतें क्यों हैं

66 छन्द जदीद—[(नि) पञ्चगीता 22 मात्रा]
भार—1 2 1 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 2 =22
सूत्र तगन तगन तितगन गन तितगन गन गन गन
उदा०—हरेक रात तुझे याद किया करते हैं
उदा०—जदीद दौर में ईमान लिए फिरता हूँ

67—छन्द चन्दन—[(नि) पञ्चगीता 22 मात्रा]
भार—2 2 1 2 2 2 2 2 1 2 2 2=22
सूत्र—गन गन तगन गन गन गन गन तगन गन गन
उदा०—धरती लहू पीकर करवट बदलती है
उदा०—शोले मुहब्बत के हर दिल में होते ड़े

68—छन्द अर्पण—[(नि) पञ्चगीतान 23 मात्रा]
भार—2 1 2 2 2 1 2 2 1 2 2 2 =23
सूत्र—गन तगन गन गन तगन गन गन तगन गन गन
उदा०—बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ
उदा०— अध्ययन विचरण से अनुभव ज्ञान आता है

69—छन्द शिवम—[(नि) पञ्चगीतान 23 मात्रा]
भार—2 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 =23
सूत्र—गन तगन गन गन गन गन गन गन गन गन गन
उदा०—कौन समझेगा मेरे मन की पीड़ा को
उदा०—मैंने जो भी सपना देखा झूठा निकला

70—छन्द केसरी—[(नि) पञ्चगीतान 23 मात्रा]
भार—2 1 2 2 1 1 2 2 2 2 2 2 2=23
सूत्र—गन तगन गन्त तगन गन गन गन गन गन गन
उदा०—कल मुझे याद अचानक ही तेरी आई
उदा०—वो मेरे दिल में रहा करता है ग़म बनकर

71—छन्द मक़बूल—[(नि) पञ्चगीतान 23 मात्रा]
भार—2 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 2 =23
सूत्र—गन तगन गन्त तगन गन्त तगन गन गन गन
उदा०—दूर रह कर न करो बात क़रीबा जाओ
उदा०—वक़्त करता जो वफ़ा आप हमारे होते

72—छन्द साम—[(नि) पञ्चगीतान 23 मात्रा]
भार—2 2 1 2 1 2 1 2 2 2 1 2 1 2 =23
सूत्र—गन गन तगन तगन तगन गन गन तगन तगन
उदा०—बस कर्म ही मनुष्य का कर्तव्य है यहाँ
उदा०—कलियुग तेरे शबाब की क्या कल्पना करूँ

73—छन्द फ़रीद—[(नि) पञ्चगीतान 23 मात्रा]

भार—2 1 2 2 1 2 1 2 1 2 1 2 2 2 =23

सूत्र—गन तगन गन तगन तगन तगन तगन गन गन

उदा०—याद तेरी फिराज आ गई सनम दिल में (सङ्गम)

उदा०—तेरी उम्मीद तेरा इन्तज़ार करते हैं

74—छन्द बेल—[(नि) पञ्चगीतान 23 मात्रा]

भार—2 1 2 2 1 1 2 2 1 2 1 2 2 2 =23

सूत्र—गन तगन गन तितगन गन तगन तगन गन गन

उदा०—तुम मुझे प्यार करो बस यही तमन्ना है

उदा०—प्यार करता हूँ तुम्हें जान से ज़ियादा मैं

75—छन्द पारस—[(नि) पञ्चगीतान 23 मात्रा]

भार—1 2 2 1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2 =23

सूत्र—तगन गन तगन तगन्त तगन गन तगन तगन

उदा०—तुम्हारी नज़र कभी न कभी आएगी इधर

उदा०—हमारे लिए न कुछ भी कभी आप लाइएगा

76—छन्द कारवाँ—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—1 2 1 2 2 1 2 1 2 2 1 2 1 2 2 =24

सूत्र—तगन तगन गन तगन तगन गन तगन तगन गन

उदा०—कभी किसी को न हाल दिल का बताओ यारों

उदा०—मुझे अचानक अजीब नज़रों से उसने देखा

77—छन्द उदास—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—2 2 1 1 2 2 2 2 2 1 1 2 2 2=24

सूत्र—गन न्त तगन गन गन गनगन्त तगन गन गन

उदा०—ये गीत मुहब्बत के हरगिज़ न भुला देना

उदा०—मुश्किल है मगर इसको शब्दों में बयाँ करना

78—**छन्द प्रवाह**—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2=24

सूत्र—तगन तगन तगन तगन तगन तगन तगन तगन

उदा०—बसेक छाँव ज़ुल्फ़ की बसिक कली बहार की (सङ्गम)

उदा०—तुम्हारे साथ ज़िन्दगी गुज़ारने का फ़ैसला

79—**छन्द सुमन**—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—2 1 2 1 2 2 2 2 1 2 1 2 2 2=24

सूत्र—गन तगन तगन गन गन गन तगन तगन गन गन

उदा०—भीड़ है क़यामत की और हम अकेले हैं

उदा०—आप से ही ख़ुशियाँ हैं, आपसे ही रञ्जो-ग़म

80—**छन्द दुष्कर**—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—2 1 1 2 1 2 1 2 2 1 1 2 1 2 1 2=24

सूत्र—गन्त तगन तगन तगन गन्त तगन तगन तगन

उदा०—शाम अभी ढली नहीं रात अभी हुई नहीं

उदा०—आप मेरे लिए ज़रा, वक़्त निकालिए हुज़ूर

(अन्त में 1 लघुवर्ण)

81—**छन्द कठिन**—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—1 1 2 1 2 1 2 2 1 1 2 1 2 1 2 2=24

सूत्र—तितगन तगन तगन गन तितगन तगन तगन गन

उदा०—यदि आप जानते हों गतिरोध का निवारण

उदा०—मेरे दिल में आज क्या है तू कहे तो मैं बता दूँ

82—**छन्द आसान**—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—2 2 1 2 1 2 2 2 2 1 2 1 2 2=24

सूत्र—गन गन तगन तगन गन गन गन तगन तगन गन

उदा०—पीछे क़दम ज़रा भी, हक़ से न टालते हैं

उदा०—सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

83—छन्द सलिल—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—1 1 2 1 1 2 2 2 1 1 2 1 1 2 2 2=24

सूत्र—तितगन्त तगन गन गन तितगन्त तगन गन गन

उदा०—गतिरोध हटाएँगे नइ राह बनाएँगे

उदा०—मैं जहाँ भी नज़र डालूँ मुझे हुस्न नज़र आए

84—छन्द मिसर—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—2 2 1 2 2 1 2 2 2 1 2 2 1 2=24

सूत्र—गन गन तगन गन तगन गन गन तगन गन तगन

उदा०—दीदार की आरज़ू पूरी हुई ख्वाब में

उदा०—अब जा के आया मेरे बेचैन दिल को क़रार

(अन्त में लघु-वर्ण)

85—छन्द विशेष—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2 1 1 2 2=24

सूत्र—तगन तगन तितगन गन तगन तगन तितगन गन

उदा०—कभी क़रीब न आए, कभी न प्यार किया, क्यों ?

उदा०—मगर शबाब में रखता था कोई गर्म बदन को

86—छन्द प्रेम—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—2 1 2 2 2 1 2 2 1 2 2 2 1 2=24

सूत्र—गन तगन गन गन तगन गन तगन गन गन तगन

उदा०—प्यार की गङ्गा बहे देश में एका रहे

उदा०—फिर तुम्हारी याद ने मन को विचलित कर दिया

87—छन्द विमल—[(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—2 1 1 2 2 2 1 1 2 2 2 1 1 2 2=24

सूत्र—गन्त तगन गन गन्त तगन गन गन्त तगन गन

उदा०—भेद हमारा दोस्त नहीं तू ज़ान सकेगा

उदा०—मन में हमारे प्रेम का पौधा तूने लगाया

88—**छन्द गुलाब**– [(नि) षष्टगीत 24 मात्रा]

भार—2 1 1 2 2 2 1 1 2 2 1 2 1 2 2=24

सूत्र—गन्त तगन गन गन्त तगन गन तगन तगन गन

उदा०—आप हमारे पास रहें तो ख़ुशी मिलेगी

उदा०—दिल में तुम्हारा प्यार बसा है यक़ीन करलो

89—**छन्द रश्मि**—[(नि) षष्टगीतन 25 मात्रा]

भार–2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 =25

सूत्र—गन गन तगन गन गन तगन गन गन तगन गन गन

उदा०—लहराएगा फिर विश्व में हिन्दुत्व का परचम

उदा०—भारत के वैभव को सभी ने लूटना चाहा

90—**छन्द सरल**—[(नि) षष्टगीता 26 मात्रा]

भार—2 1 2 2 21 22 2 1 2 2 2 1 2=26

सूत्र—गन तगन गन गन तगन गन गन तगन गन गन तगन

उदा०—हादिसे के बाद मिलते हैं फ़क़त वीरान घर

उदा०—इस हिमालय से कोई गङ्गा निकलती चाहिए

91—**छन्द कभी**—[(नि) षष्टगीता 26 मात्रा]

भार—1 2 2 2 2 2 2 2 1 2 2 2 2 2 =26

सूत्र—तगन गन गन गन गन गन गन तगन गन गन गन गन

उदा०—किसी को रख दिल में तूभी किसी से करले प्यार

उदा०—मैं तुझसे करता हूँ उल्फ़त, बताऊँ कैसे मैं

92—**छन्द सुघोष**—[(नि) सप्तगीत 28 मात्रा]

भार—1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2=28

सूत्र—तगन गन गन तगन गन गन तगन गन गन तगन गन गन

उदा०—लड़कपन में तुझे छूकर कुछेसे मुस्कुराया था (सङ्गम)

उदा०—न मेरे दिल की धड़कन लड़खड़ाए मेरी बातों में

93—**छन्द वीर**—[(नि) सप्तगीत 28 मात्रा]

भार—2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2=28

सूत्र—गन गन तगन गन गन तगन गन गन तगन गन गन तगन

उदा०—ऐ दिल ! मुझे ऐसी जगह ले चल जहाँ कोई न हो

उदा०—कुछ ईश्वरेच्छा थी मगर, कुछ ग़ल्तियाँ हमने भी कीं

94—**छन्द श्लो**—[(नि) सप्तगीत 28 मात्रा]

भार—1 1 2 1 2 1 1 2 1 2 1 1 2 1 2 1 1 2 1 2=28

सूत्र—तितगन तगन तितगन तगन तितगन तगन तितगन तगन

उदा०—नइ राह का नइ सोच का न विरोध कर न विरोध कर

उदा०—नए रास्तों पे क़दम बढ़ा नइ मञ्ज़िलों का ख़याल कर

95—**छन्द सरला**—[(नि) सप्तगीत 28 मात्रा]

भार—2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2=28

सूत्र गन तगन गन गन तगन गन गन तगन गन गन तगन गन

उदा०—पीड़ितों का मौन क्रन्दन, दीन दुखियों की व्यथाएँ

उदा०—फिर भी मेरे बच निकलने की कोई सूरत नहीं थी

96—**छन्द सुगम**—[(नि) सप्तगीत 28 मात्रा]

भार—2 2 1 2 1 1 2 1 2 2 2 1 2 1 1 2 1 2=28

सूत्र— गन गन तगन तितगन तगन गन गन तगन तितगन तगन

उदा०—हमसे तुम्हें यदि कष्ट है तो तुम कहो न ख़फ़ा रहो

उदा०—दिल में अगर कोई आरज़ू आ जाए तो न बयाँ करो

97—**छन्द सहल**—[(नि) सप्तगीत 28 मात्रा]

भार—1 1 2 1 2 2 2 1 2 1 1 2 1 2 2 2 1 2=28

सूत्र—तितगन तगन गन गन तगन तितगन तगन गन गन तगन

उदा०—गतिरोध सारे तोड़कर नइ राह पर चलने लगे

उदा०—मेरा देश फिर अब माँगता बलिदान है आगे बढ़ो

98—**छन्द नर्गिस**—[(नि) सप्तगीत 28 मात्रा]

भार—2 2 1 2 2 1 2 2 2 2 1 2 2 1 2 **2**=28

सूत्र—गन गन तगन गन तगन गन गन गन तगन गन तगन गन

उदा०—तुम साथ जो चल रहे हो लगता हसीं हर सफ़र है

उदा०—लाखों हसीं ख़्वाब मेरी आँखों में पलने लगे हैं

99—**छन्द जूही**—[(नि) सप्तगीत 28 मात्रा]

भार—2 2 2 1 2 1 2 2 2 2 2 1 **2** 1 **2** 2=28

सूत्र—गन गन गन तगन तगन गन गन गन गन तगन तगन गन

उदा०—जङ्गल में अगर भटकते रस्ता खोज-खोज थकते

उदा०—तुमको मुझसे प्यार है तो आओ मेरे पास आओ

100—**छन्द सत्य**—[(नि) सप्तगीता 30 मात्रा]

भार—2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 **2** 2 2 2 =30

सूत्र—गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन

उदा०—मुग़लों की ताक़त को जिसने तलवारों पर तोला था

उदा०—हम भारत माता की ख़ातिर दुनिया से लड़ जाएँगे

101—**छन्द दोरवाँ**—((नि) अष्टगीत 32 मात्रा)

भार—1 2 1 2 2 1 2 1 2 2 2 1 2 1 2 2 1 2 1 2 2 =32

सूत्र—तगन तगन गन तगन तगन गन तगन तगन गन तगन तगन गन

उदा०—नसीब मेरा मुझे तमाशा बना रहा है, बता करूँ क्या

उदा० मिरे ख़यालों की रह गुज़र से वो देखो वो अब गुज़र रहे हैं

102—**कञ्चन** [(नि) अष्टगीत 32 मात्रा]

भार—2 1 1 2 **2** 2 1 1 2 2 2 1 1 2 2 2 1 1 2 2 =32

सूत्र—गन्त तगन गन गन्त तगन गन गन्त तगन गन गन्त तगन गन

उदा०—राह कँटीली, घोर अँधेरा, किन्तु हमारा शौर्य अटल है

उदा०—दोस्त ! जहाँ में लोग हमेशा अपने लिए ही जीते रहे हैं

103—छन्द तबोल—[(नि) नवगीत 36 मात्रा]

भार—2 1 2 1 2 2 2 2 1 2 1 2 2 2 **2** 1 **2** 1 2 2 2=36

सूत्र— गन तगन तगन गन गन गन तगन तगन गन गन गन तगन तगन गन गन

उदा०—हूँ पहाड़ की सूरत, राहे ज़ीस्त में हाइल, ख़ुद परिस क़दर माइल

उदा०—इसके बावजूदस्मत वो कभी कभी मुझको, फूँक कर हटाता है। (सङ्गम)

104—छन्द दीर्घ—[(नि) नवगीत 36 मात्रा]

भार—2 2 1 2 1 2 2 2 2 1 2 1 2 2 2 2 1 2 1 2 2 2=36

सूत्र—गन गन तगन तगन गन गन गन तगन तगन गन गन गन तगन तगन गन

उदा०—तुमको ख़बर नहीं है, हम प्रीत में तुम्हारी, किस तौर रम गए हैं

उदा०—हालात देश के अब, गम्भीर हो गए हैं, कोई तो हल निकालो

सभी उदाहरणों की दूसरी पंक्ति में सभी काले अक्षरों को दीर्घ होते हुए भी लघु गिना जाएगा।

□ □

उपर्युक्त छन्दों के इलावा भी लाखों करोड़ों छन्द हैं। आप स्वयम् निर्णय कर सकते हैं कि छन्दों का वैज्ञानिक नामकरण याद करना सम्भव है या संज्ञा नाम जो लाखों करोड़ों होने चाहिए।

वास्तव में विभिन्न कालों में एक ही 'छन्द' को अलग-अलग नामों से पुकारा गया है अतः नवछन्द के वैज्ञानिक पद्धति के नाम ही उचित हैं।

□ □

वर्तमान में छन्द प्रयोग

वास्तव में छन्द सङ्गीत से उत्पन्न हुए हैं या सङ्गीत का ही रूप है अतः छन्दों को सङ्गीत के आधार पर प्रयोग करना उचित है अर्थात शब्द रचना का आधार सङ्गीत होना चाहिए। नवछन्द में सङ्गीत पर आधारित छन्द प्रयोग है यानी

एक रचना में समान लय वाले विभिन्न भार यानी छन्द कवि-शाइर प्रयोग कर सकते हैं, यानी 14 मात्रा के अनेक वर्णक्रम हैं जैसे—

(क) 2 1 1 2 2 2 2 2

दोस्त कहाँ से आए हो

या

(ख) 2 2 2 2 2 1 1 2

लगते हो घबराए हुए

या

(ग) 2 2 2 1 1 2 2 2

बैठो, साँस ज़रा ले लो

इन सभी की लय समान है अतः कवि-शाइर इन्हें एक रचना में प्रयोग कर सकते हैं।

छन्दों के नवीन प्रयोग—वर्तमान समय की विसङ्गतियों ने अतुकान्त कविता (आज़ाद-नज़्म) को जन्म दिया। वास्तव में अतुकान्त कविता ही वास्तविक कविता है यही **'वेद'** में पाई जाती है। तुक, रदीफ़ या विभिन्न पंक्तियों वाली 'बन्द व्यवस्था' कवि शाइर को बन्धन में रखती है अतः अतुकान्त कविता की छन्द-योजना जानना ज़रूरी है। वास्तव में अतुकान्त कविता पूर्णतः छन्दबद्ध होती है, सङ्गीतपूर्ण होती है इसमें नियम विरुद्ध एक अक्षर का भी स्थान परिवर्तन नहीं हो सकता, उदाहरणार्थ निम्न कविता देखिए—

अतुकान्त कविता	छन्द सूत्र	भार
न ये शरीर तुम्हारा है	तगन तगन तितगन गन त-	1 2 1 2 1 1 2 2 1
ना तुमिसके हो	गन तगन गन गन	2 1 2 2 2
ये आस्मान, हवा, आग, आबो-गिल से	तगन तगन तितगन गन तगन तगन्त	1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2 1
बना हुआ है और	तगन तगन तगन्त	1 2 1 2 1 2 1
इसी में समाएगा इक दिन	तगन गन तगन तगन गन गन	1 2 2 1 2 1 2 2 2
मगर है रूह अमर !	तगन तगन तितगन	1 2 1 2 1 1 2
तो बताओ तुम क्या हो ?	गन तगन तगन गन गन	2 1 2 1 2 2 2

विशेष—पूरी रचना पूर्णतः सङ्गीत बद्ध है आप इसे निम्न फ़िल्मी गीत की '**लय**' में गा सकते हैं—

"कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता"।

वास्तव में किसी छन्द विशेष में लिखो तुक विहीन पंक्तियाँ जो किसी एक विचार को स्पष्ट करती हैं अतुकान्त कविता कहलाती हैं. एक उदाहरण और देखिए—

अतुकान्त कविता

गया ही क्या है तुम्हारा जो तुम परेशाँ हो
भार—1 2 1 2 1 1 2 2 1 **2** 1 2 **2** 2

ज़रा बताओ तो क्या लाए थे **तुमपने** साथ
भार—1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2 2 2 1

कि तुमने जो भी लिया वो इसी जहाँ से लिया
भार—1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2 1 1 2

कि तुमने जो भी दिया वो इसी जहाँ को दिया
भार—1 2 1 2 1 1 **2** 2 1 2 1 2 1 1 2

हरेक शख़्स ही आया जहाँ में ख़ाली हाथ
भार—1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2 2 2 1

हरेक शख़्स को जाना पड़ेगा ख़ाली हाथ
भार—1 2 1 2 1 1 2 2 1 2 1 2 2 2 1

इसे यूँ भी लिख सकते हैं—

गया ही क्या है तुम्हारा ?
जो तुम परेशाँ हो
ज़रा बताओ तो
क्या लाए थे तुम अपने साथ ?
कि तुमने जो भी लिया
वो इसी जहाँ से लिया
कि तुमने जो भी दिया
वो इसी जहाँ को दिया
हरेक शख़्स ही
आया जहाँ में ख़ाली हाथ
हरेक शख़्स को
जाना पड़ेगा ख़ाली हाथ

आप देख सकते हैं कि किस प्रकार सभी पंक्तियाँ छन्दबद्ध हैं तथा सभी का भार व लय समान है। प्रत्येक लय के अन्त में एक **लघुवर्ण** आ सकता है जैसा कि साथ, हाथ में 'थ' वर्ण है।

इसी प्रकार 2 1 **2** या 1 2 2 या 2 1 2 **2** ...आदि विभिन्न लय अतुकान्त रचनाओं का आधार यानी सङ्गीत हो सकती हैं।

रुबाई और रुबाई का छन्द विधान

रुबाई मूलतः फ़ारसी काव्य विधा है लेकिन उर्दू तथा हिन्दी में भी भी रुबाइयाँ लिखी गई हैं। लगभग हर कवि-शाइर 'रुबाई' के मृदुल नाम से इतना प्रभावित होता है कि अपनी छोटी रचनाओं का शीर्षक रुबाई रख देता है। हिन्दी व उर्दू दौनों भाषाओं के जाने-माने कवि तक रुबाई विधा से अपरिचित हैं। अपने सङ्कलन मुक्तकी में हिन्दी कवि श्रेष्ठ जनाब गोपालदास नीरज ने दस (10) रुबाइयाँ (?) दी हैं मगर आश्चर्य इस बात का है कि एक भी रुबाई नहीं है। इसी प्रकार उर्दू के एक बुज़ुर्ग शाइर हैं जनाब 'शजर' टकारवी (गया) उन्होंने रुबाई पर एक मज़्मून लेखा मगर उन्हें रुबाई के बारे में शून्य जानकारी थी। मुझसे उन्होंने पत्रों द्वारा काफ़ी बहस की अन्त में जब अपनी बात को ग़लत पाया तो बड़े लज्जित हुए। हिन्दी के एक और कवि जनाब गिरिराज शरण अग्रवाल (बिजनौर) ने एक पुस्तक सम्पादित की "**हिन्दी के मुक्तक और रुबाइयाँ**" मगर पूरी पुस्तक में कहीं पर भी मुक्तक और रुबाई के अन्तर को नहीं बताया और न पुस्तक को पढ़ने से ये ज़ाहिर होता है कि अमुक रचना रुबाई है और अमुक रचना मुक्तक !

उपर्युक्त विवरण लिखने का एक मात्र उद्देश्य हिन्दी कवियों की नई पीढ़ी को ये बताना है कि **बिनु गुरु ज्ञान कहाँ से पाऊँ ?** जो लोग बिना गुरु के आगे बढ़ते हैं वे उपर्युक्त की ही भाँति जीवन भर वास्तविकता से दूर भ्रम में जीते हैं। मेरी अगली पंक्तियाँ कुछ तथाकथित महान व प्रसिद्ध लोगों को बहुत कड़वी लगेंगी मगर ये कड़वी दवा है हज़्म कर ली तो नीरोग हो जाएँगे। सत्य तो ये है कि निराला, पन्त, अज्ञेय, मुक्तिबोध.....इनमें से किसी को भी कविता की रत्ती भर समझ या तमीज़ नहीं थी कारण वही बिनु गुरु ज्ञान कहाँ से पाऊँ.....? ख़ैर !

रुबाई का मूल भार—2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2=20 होता है। (अन्त में एक लघु-वर्ण आ सकता है)

लयछन्द सूत्र—गन गन्त तगन गन्त तगन गन्त तगन

फ़ारसी अर्कान—मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु फ़अल

उदाहरण की पंक्ति—हम रोज़ परेशान-परेशान रहे ।

उदाहरण की पंक्ति—हर पुष्प सदा, रङ्ग बिरङ्गा न रहा ।

रुबाई के बहरे हज़ज से प्राप्त कुल चौबीस (24) भार होते हैं किन्तु भारत में प्रायः 6 भार ही प्रयोग में देखे गए हैं । मैंने यह पाया है कि रुबाई के 24 भारों की 'लय' भिन्न है । रुबाई में यह विशेष छूट होती है कि एक रुबाई की चार पंक्तियाँ चार विभिन्न भारों में हो सकती हैं। रुबाई के कुछ भार ऐसे हैं जो रुबाई की मूल 'लय' को भङ्ग कर देते हैं तथा अनेक उर्दू छन्द शास्त्रियों ने नियमसङ्गत तरीक़े से रुबाई के भारों की संख्या 36 और 56 कर दी है किन्तु यह भी एक सीमा है। 'नवछन्द' तो असीमित है अतः नवछन्द ने रुबाई विधा को अन्य विधाओं से अलग रखते हुए असीमित बना दिया है ।

नवछन्द में रुबाई—रुबाई में चार पंक्तियाँ होती हैं। पहली, दूसरी तथा चौथी पंक्तियाँ तुकान्त होनी ज़रूरी हैं—

रुबाई

माज़ी से सबक़ ले के सँभलना होगा,
हर एक बुरी शै को कुचलना होगा ।
निर्माण 'नए हिन्द' का करना है, तो,
क़ानूने-वतन 'ख़्वाब' बदलना होगा ।।

भार—2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 2
(माज़ी—अतीत, क़ानूने-वतन—देश का संविधान)

उपर्युक्त रुबाई में सँभलना, कुचलना तथा बदलना के तुक हैं तथा 'होगा' शब्द 'रदीफ़' है ।

तुक— परस्पर सानुप्रास शब्दों को 'तुक' कहते हैं । जैसे—
ख़बर, असर, नज़र, पर, तर, मर, तरुवर, शङ्कर.....।
आचमन, मन, तन, दमन, बदन, थकन, जलन.....।

तुक तीन प्रकार के होते हैं—
(1) सभार (2) अभार (3) नभार

(1) सभार—जिन शब्दों का भार समान हो तथा वे सानुप्रास हों जैसे—

सर, पर, तर, मर चर, कर, डर.....।
नज़र, ख़बर, असर, ज़फ़र, सफ़र..... ।

उदा०—ज़िन्दगी में तिरी क़रार आए।
मुस्कुराती हुई बहार आए॥

(2) अभार—जिन शब्दों का भार असमान हो मगर शब्द परस्पर सानु-प्रास हों। जैसे—

तर-ख़बर ..... तट-झटपट ..... मचल-गल

उदा०—अपनी आदत बदल नहीं सकता।
मैं तिरे साथ चल नहीं सकता॥

(3) नभार—जिन शब्दों के अन्त में सिर्फ़ मात्रा की समानता होती है जैसे—

उठा-गिरा ..... नदी-ज़िन्दगी ..... चले-रखे .....।

उदा०—सिला जो माँगे वफ़ा नहीं है।
वफ़ा का कोई सिला नहीं है॥

रदीफ़—तुकान्त शब्दों के बाद जो 'शब्द' या 'शब्द-समूह' आता है उसे 'रदीफ़' कहते हैं। जैसे—उपर्युक्त शेरों में क्रमशः—

पहले शेर में—**आए**, रदीफ़ है।
दूसरे शेर में—**नहीं सकता**, रदीफ़ है।
तीसरे शेर में—**नहीं है**, रदीफ़ है।
उदाहरण की रुबाई में होगा शब्द रदीफ़ है।

रुबाई—'नवछन्द' में प्रत्येक वह 20 मात्रा भार जिसके आरम्भ में 2 2 : भार आवश्यक रूप से हो, तथा पहली, दूसरी तथा चौथी पंक्ति तुकान्त हों 'रुबाई' कहलाएगा। रुबाई में तुक होना आवश्यक है, रदीफ़ हो चाहे न हो। हिन्दी की एक रुबाई देखिए जिसमें रदीफ़ नहीं है—

रुबाई

हर फूल सदा बीज के अनुरूप खिला,
वैसा ही खिला जैसा कि आहार मिला।
आहार पे रखनी है हमें दृष्टि सदा,
आहार है आचार की आधार शिला॥

(स्वामी श्यामानन्द 'सरस्वती')

विशेष—रुबाई को अद्भुत विस्तार देने का विचार मुझे स्वामी श्यामानन्द से ही प्राप्त हुआ था। वर्ष 92 में मैंने एक बार में स्वामी जी की 2000 रुबाइयों की इस्लाह (त्रुटि संशोधन) लगातार 12 दिन में की थी। —(ख़्वाब)

मन्थन

विभिन्न प्राचीन छन्दशास्त्रों के अनेक नियमों को निरस्त करके 'नवछन्द' में नवीन छन्द नियम बनाए गए हैं। 'मन्थन' के अन्तर्गत विभिन्न प्राचीन नियमों को निरस्त करने का कारण प्रस्तुत किया जाता है।

वास्तव में हिन्दी खड़ी बोली की कविता से छन्दों की समाप्ति का सबसे मुख्य कारण था—"हिन्दी खड़ी बोली का संस्कृत, बृज तथा अवधी भाषा के 'छन्द' तथा "छन्द-नियमों" के पूर्णतः अनुकूल न होना।" हिन्दी खड़ी बोली में बृज तथा अवधी भाषा जैसा लोच नहीं है तथा संस्कृत की तुलना में खड़ीबोली हिन्दी की गति अधिक है अर्थात संस्कृत का उच्चारण हिन्दी उच्चारण से भिन्न है उदाहरणार्थ संस्कृत उच्चारण तथा दीर्घ-लघु वर्णों का क्रम निम्नलिखित शब्दों में देखिए—

1. कमल—क म ल=तीन लघु वर्ण (संस्कृत उच्चारण धीमा है)
2. सरगम—स र ग म=चार लघु वर्ण (,,)
3. विमला—वि म ला=दो लघु वर्ण तथा एक दीर्घ वर्ण (,,)
4. आत्मा—आ त्मा=दो दीर्घ वर्ण
5. शिक्षा—शि क्षा=एक लघु वर्ण तथा एक दीर्घ वर्ण
6. संस्कार—सं स्का र=दो दीर्घ वर्ण तथा एक लघु वर्ण

अब उपर्युक्त सभी शब्दों के हिन्दी उच्चारण देखिए—

1. कमल—क मल्=एक लघु वर्ण एक दीर्घ वर्ण
2. सरगम—सर् गम्=दो दीर्घ वर्ण
3. विमला—विम् ला=दो दीर्घ वर्ण
4. आत्मा—आ त मा=प्रथम दीर्घ, द्वितीय लघु, तृतीय दीर्घ वर्ण
5. संस्कार—सं स का र=प्रथम दीर्घ, द्वितीय लघु, तृतीय दीर्घ, चतुर्थ लघु वर्ण
6. शिक्षा—शिक् शा=दो दीर्घ वर्ण

हिन्दी तथा उर्दू के उच्चारण समान हैं।

संस्कृत छन्दों में लघुवर्ण तथा दीर्घ वर्णों की संख्या निश्चित होती है तथा इसी आधार पर 'छन्द विशेष की लय निर्धारित होती है। "वास्तव में 'छन्द' विभिन्न प्रकार के लघु-दीर्घ उच्चारणों के समूह हैं।" जब हिन्दी-संस्कृत के उच्चारणों में भिन्नता है तब हम दौनों भाषाओं हेतु एक ही 'छन्दशास्त्र' का प्रयोग कैसे कर सकते हैं ? बृज भाषा या अवधी या अरबी-फ़ारसी या यूनानी.....संसार भर की भाषाओं ने संस्कृत के छन्दशास्त्र की सहायता से अपने छन्दशास्त्र का निर्माण किया है अथवा अनुकूल होने पर संस्कृत छन्दों को ज्यों का त्यों अपनाया है।

उदाहरणार्थ मैं अरबी-फ़ारसी छन्दशास्त्र (उर्दू अरूज़) में सम्मिलित संस्कृत छन्दों को लिख रहा हूँ। वास्तव में संस्कृत के अनेक छन्दों को अरबी-फ़ारसी छन्दशास्त्र में ज्यों का त्यों रख लिया गया है तथा कुछ को अपनी भाषा के अनुकूल बनाकर यानी कुछ परिवर्तनों के साथ अरबी-फ़ारसी अरूज़ में शामिल किया गया।

1—**छन्द नाराच**—जटाटवी गलज्जलल प्रवाह पावितस्थले।

बहर हज़ज मक़्बूज़—कहीं किसी नज़र से प्यार हो गया अगर तुम्हें

अर्कान—मफ़ाइलुन-मफ़ाइलुन-मफ़ाइलुन-मफ़ाइलुन

2—**छन्द स्त्रिग्विणी**—इन्द्रनी लोपले नैव या निर्मिता।

बहर मुतदारिक सालिम—आदमी ख़ुद बनेगा ख़ुदा एक दिन।

अर्कान—फ़ाइलुन-फ़ाइलुन-फ़ाइलुन-फ़ाइलुन

3—**छन्द भुजंग प्रयात**—नमामी शमीशान निर्वाण रूपम्।

बहर मुतक़ारिब सालिम—नहीं इश्क़ का दर्द लज़्ज़त से ख़ाली।

अर्कान—फ़ऊलुन-फ़ऊलुन-फ़ऊलुन-फ़ऊलुन

4—**छन्द त्रोटक**—यत राम रमा रमनम् समनम्।

बहर हज़ज अख़रब अबतर मुसद्दस—हर रात तिरे सपने हमको

अर्कान—मफ़ऊलु मफ़ाईलुन-फ़ेलुन

इसे बहरे-मुतदारिक मख़्बून मुसक्कन भी मान सकते हैं। लेकिन मुतदारिक मख़्बून नहीं क्योंकि हिन्दी का सगण (112) अरूज़ का "फ़इलुन" नहीं होता है।

5—**छन्द हरिगीतिका**—श्री रामचन्द्र कृपालु भज्मन हरण भवमय दारुणम्
बहर रजज़ सालिम—ऐ दिल मुझे ऐसी जगह ले चल जहाँ कोई न हो।
अर्कान—मुस्तफ़इलुन-मुस्तफ़इलुन-मुस्तफ़इलुन-मुस्तफ़इलुन
(बहरे कामिल भी छन्द हरि गीतिका ही है)

6—**छन्द गीतिका**—ब्रह्मचारी, धर्मधारी, ब्रह्मज्ञानी सत्पुरुष (सद्गुणी)
बहर रमल सालिम महज़ूफ़—एक कमरे के मकानों का किरिश्मा देखिए।
अर्कान—फ़ाइलातुन-फ़ाइलातुन-फ़ाइलातुन-फ़ाइलुन

इसी प्रकार संस्कृत छन्द **रूपमाला**, बहरे रमल मक़्लूअ मक़्सूर होता है **छन्द चामर**, बहरे हज़ज अश्तर मक़्बूज़ होता है।

संस्कृत के कुछ छन्द सम्भवतः अल्प परिवर्तन के साथ अरबी-फ़ारसी अरूज़ में सम्मिलित किए गए जैसे छन्द **उपेन्द्रवज्रा** को उसके मध्य से एक लघुवर्ण हटाकर स्वभाषा-लय के अनुकूल बनाकर अरूज़ में रखा गया—

7—**छन्द उपेन्द्रवज्रा**—भवन्ति वर्णा लघुता समेताः।
बहर मुतक़ारिब अस्लम मक़्बूज़—ज़िहाले मिस्कीं मकुन तग़ाफ़ुल्।
अर्कान—फ़ऊल फ़ेलुन फ़ऊल फ़ेलुन।
टिप्पणी—'लघुता' का 'ल' वर्ण हटाकर उपरोक्त बहर का वज़न बना है।

अब मैं एक फ़ारसी शेर लिख रहा हूँ जो छठी शताब्दी का है यानी अरबी-फ़ारसी अरूज़ यानी छन्द शास्त्र बनने से भी 250-300 वर्ष पहले का शेर बल्कि इस्लाम मत के प्रादुर्भाव से भी प्राचीन शेर। यह शेर संस्कृत "छन्द-भुजङ्गप्रयात" में रचित है अर्थात अरब व फ़ारस में संस्कृत छन्द ज्ञान प्रचलित था—

शेर (फ़ारसी)

हुज़ीरे बगीहाँ अनोशा बज़ी,
जहाँरा निगह्बाँ अनोशा बज़ी।

(अन्त में एक दीर्घ वर्ण कम होने के कारण इसे "छन्द-भुजङ्गी कहेंगे)

अहले-अरब (अरब वालों) ने संस्कृत के छन्दशास्त्र को स्वभाषा के अनुरूप परिवर्तित करते हुए अपनाया अहले-फ़ारस ने भी संस्कृत व अरबी छन्दशास्त्र को निज भाषा की प्रकृति के अनुकूल बनाकर ही अपनाया। अहले-अरब ग़लती' शब्द में (112) मात्राएँ मानते हैं मगर अहले-फ़ारस (22) मात्राएँ मानते हैं। अहले-फ़ारस ने अहले-अरब के अनेक ज़िहाफ़ का प्रयोग भी स्वआवश्यकतानुसार परिवर्तित करके किया।

अहले-उर्दू ने भी अरबी-फ़ारसी अरूज़ को कुछ परिवर्तनों के साथ प्रयोग किया।

चूँकि भाषा काल के अनुरूप परिवर्तित होती रहती है अतः 'उर्दू' को भी परिवर्तित होना पड़ा जहाँ पहले अरबी-फ़ारसी के शब्द तथा लम्बी-2 तरकीबें उर्दू की शान समझी जाती थीं आज हिन्दी के सरल शब्द तथा मुहावरे उर्दू में आ गए हैं बल्कि दो से अधिक शब्दों की तरकीब, असातज़ा (उस्ताज़ का बहुवचन) ने मायूब (बड़ा दोष) की श्रेणी में रखदी हैं।

तरकीब—जामे-शराब, आग़ाज़े-परवाज़े-दिल

संक्षेप में कह सकते हैं कि 'उर्दू' अपने प्राचीन रूप की ओर ही बढ़ रही है। वास्तव में "हिन्दवी-भाषा" के रूप दो हुए एक देवनागरी में लिखा गया और 'हिन्दी' कहलाया और दूसरा फ़ारसी में लिखा गया और रेख्ता (उर्दू) कहलाया। 'हिन्दी' तथा 'उर्दू' दौनों की लिपियाँ भिन्न हैं मगर मिज़ाज व व्याकरण एक है यही कारण है कि आज हिन्दी में अधिकांश उर्दू बहरों (वास्तव में अरबी-फ़ारसी अरूज़ तथा मूलतः संस्कृत छन्द) का प्रयोग हो रहा है। वास्तव में 'हिन्दी' ने अलिखित रूप में हुए या किए गए "काव्य-व्याकरण" के परिवर्तन को पूर्णतः स्वीकार कर लिया है। किन्तु जब तक लिखित रूप में यह नियम नहीं होंगे तब तक इनके अन्तर्गत रचित काव्य को मान्यता प्राप्त नहीं हो सकती। यही कारण है कि आज उर्दू के नामीगिरामी शाइर जिस प्राकृतिक नियम का प्रयोग खुलकर करने लगे हैं वह छन्दशास्त्र (उर्दू) के अनुसार ग़लत है। उर्दू अरूज़ का ये भेदभावपूर्ण तथा अप्राकृतिक नियम उर्दू के नामी गिरामी शाइरों द्वारा बार-2 तोड़ा गया है और ये नियम है—

"शेर में प्रयुक्त केवल हिन्दी शब्दों की दीर्घ मात्राओं को गिराना यानी दीर्घ वर्ण को भी लघु मानना किन्तु ऐसा मात्र हिन्दी शब्दों के साथ करना सम्भव है अरबी-फ़ारसी शब्दों के साथ नहीं यानी शेर में प्रयुक्त अरबी-फ़ारसी शब्दों की कोई भी मात्रा नहीं गिरा सकते।"

वास्तव में दीर्घ को लघु उच्चारित करना दोष नहीं है यह पूर्णत: प्राकृतिक है **कभी भी किसी वाक्य या पंक्ति के समस्त दीर्घ वर्ण दीर्घ उच्चारित नहीं किए जा सकते हैं बोलते समय भाव तथा उतार-चढ़ाव के कारण अनेक दीर्घ वर्ण भी ह्रस्व उच्चारित होते हैं ।**

अरूज़ के इस अप्राकृतिक **नियम** को ग़ज़ल के बादशाह माने जाने वाले सर्वकालीन सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लगो शाइर मीर तक़ी 'मीर' ने बार-बार तोड़ा है इससे ये सिद्ध होता है कि ये **नियम** जनमानस ने स्वीकार नहीं किया है तथा यह अनर्गल नियम कथ्य में बाधा उत्पन्न करता है । मीर के कुछ शेर पेश हैं—

1. दिल की आबादी की इस हद है ख़राबी कि न पूछ,
   जाना जाता है कि इस राह से लश्कर निकला ।

भार—2 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 2 या 2 2 1

अर्कान—फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ेलुन या फ़ेलान

बहर—रमल सालिम मख़्बून मख़्बून मुसक्किन महज़ूफ़ मक़्सूर मुसम्मन ।

दोष—बहर के अनुसार 'आबादी' की ई की मात्रा गिरानी पड़ेगी जो ग़लत माना जाएगा क्योंकि 'आबादी' फ़ारसी शब्द है । दूसरी ओर की, है, जाना, से, आदि शब्दों की मात्राएँ गिर रही हैं, वह उचित है ।

2. वो खेंच के शमशीरे-सितम रह गया जो 'मीर'
   ख़ूँरेज़ी का याँ कोई सज़ावार न पाया ।

भार—2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 या 1 2 2 1

अर्कान—मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु फ़ऊलुन या मफ़ाईल

बहर—हज़ज अख़रब मकफ़ूफ़ मकफ़ूफ़ महज़ूफ़ या मक़्सूर मुसम्मन

दोष—ख़ूँरेज़ी की 'ई' की मात्रा वज़्न के मुताबिक़ गिरानी पड़ेगी जो ग़लत माना जाएगा क्योंकि 'ख़ूँरेज़ी' फ़ारसी शब्द है दूसरी ओर अनेक हिन्दी शब्दों की मात्राओं का गिरना उचित माना जाएगा ।

3. उस शोख़ से हमें भी अब यारी हो गई है,
शर्म अँखड़ियों में जिसकी अय्यारी हो गई है।

भार—2 2 1 2 1 2 2 2 2 1 2 1 2 2

अर्कान—मफ़ऊलु फ़ाइलातुन मफ़ऊलु फ़ाइलातुन

बहर—मुज़ारे अख़रब सालिम अख़रब सालिम मुसम्मन

दोष—यारी (फ़ारसी) और अय्यारी (अरबी) शब्दों की 'ई' की मात्रा गिरानी पड़ेगी जो ग़लत माना जाएगा। जबकि 'में' (हिन्दी) को लघु पढ़ना उचित माना जाएगा।

मीर के इलावा भी अनेक नामी-गिरामी शाइरों ने इस नियम का उल्लंघन किया है इसका स्पष्ट सा कारण यह है कि मात्रा हिन्दी हो या अरबी-फ़ारसी वह तभी गिरती है जब लय में खप जाती है अर्थात छन्द या शेर का प्रवाह कहीं अटकता नहीं यानी लयभङ्ग नहीं होती। कुछ और शाइरों के शेर भी उदाहरण के लिए पेश हैं—

1. तूने देखी है वो पेशानी वो रुख़्सार वो होंट,
ज़िन्दगी जिनके तसव्वुर में लुटा दी हमने। (फ़ैज़ अहमद फ़ैज़)

भार—2 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 2 या 2 2 1

अर्कान—फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ेलुन या फ़ेलान

बहर—रमल सालिम मख़्बून मख़्बून मख़्बून मुसक्किन महज़ूफ़/मक़्सूर मुसम्मन।

दोष—पेशानी (फ़ारसी) की 'ई' की मात्रा गिरानी पड़ेगी। जबकि इस मात्रा का गिराना छन्द के प्रवाह को नहीं बिगाड़ रहा है यानी लय भङ्ग नहीं हो रही है।

2. मैं तो एक काग़ज़ी फूल था जो तमाम ख़ुश्बू से भर गया
मैं कहाँ था मुझको ख़बर नहीं मुझे कौन छू के गुज़र गया।
(बशीर बद्र)

भार—1 1 2 1 2 1 1 2 1 2 1 1 2 1 2 1 1 2 1 2

अर्कान—मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन

बहर—कामिल सालिम सालिम सालिम सालिम मुसम्मन

दोष—क़ागज़ी (अरबी) तथा ख़ुश्बू (फ़ारसी) की ई तथा 'ऊ' की मात्राएँ गिर रही हैं मगर इनके गिरने से भी लय भङ्ग नहीं हो रही है। हल्का असर पड़ रहा है।

3. ख़ाली दिल का मकाँ है न आया करो,
   ज़िन्दगी अब कहाँ है न आया करो।

भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

अर्कान—फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन

बहर—मुतदारिक सालिम सालिम सालिम सालिम मुसम्मन

दोष—ख़ाली (अरबी) की ई की मात्रा गिर रही है मगर इससे भी छन्द की लय भङ्ग नहीं हो रही है।

वास्तव में मात्राओं का गिरना यदि लय को भङ्ग नहीं कर रहा हो तो किसी भी शब्द की (चाहे वह अरबी-फ़ारसी हो या हिन्दी) मात्रा गिराने में कोई हर्ज नहीं है। दूसरी तरफ लय भङ्ग करते हुए यदि हिन्दी शब्दों की अरूज़ के अनुसार उचित (?) मात्रा भी गिराएँगे तो वह निश्चित रूप से दोष होगा जो निम्नलिखित शेरों में स्पष्ट है—

1. कब बन्दगी मेरी सी बन्दा करेगा कोई,
   जाने है ख़ुदा उसको मैं तुझको ख़ुदा जाना। (मीर तक़ी 'मीर)

भार—2 2 1 1 2 2 2 2 2 1 1 2 2 2

अर्कान—मफ़ऊलु मफ़ाईलुन मफ़ऊलु मफ़ाईलुन

बहर—हज़ज अख़रब सालिम अख़रब सालिम मुसम्मन

'मीर' के इस शेर में एक तरफ़ तो बन्दगी (फ़ारसी) की मात्रा गिर रही है जो अरूज़ के मुताबिक़ ग़लत है जबकि इस मात्रा के गिराने से छन्द के प्रवाह पर बहुत हल्का असर पड़ रहा है (असर पड़ तो रहा है) दूसरी तरफ़ हिन्दी शब्द 'करेगा' में 'रे' की 'ऐ' की मात्रा गिर रही है तथा ये अरूज़ के अनुसार उचित है जबकि इस मात्रा के गिरने से लय पूर्ण-रूपेण भङ्ग हो रही है छन्द अपना प्रवाह खो रहा है मैं इसे दोष मानूँगा।

2. दिल के हाथों ही तो मजबूर होकर ज़ेह्न ने 'ख़्वाब'
ज़ीस्त को ऐश की हर चीज़ मुहैया कर दी।
('ख़्वाब' अकबराबादी)

भार—2 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 या 2 2 1

अर्कान—फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ेलुन या फ़ेलान

बहर—रमल सालिम मख़्बून मख़्बून मख़्बून मुसक्किन महज़ूफ़/मक़्सूर मुसम्मन।

इस शेर में 'होकर' शब्द की 'ओ' की मात्रा अरूज़ के नियम सङ्गत गिर रही है यानी इसका गिरना उचित है मगर इससे छन्द की लय भङ्ग हो रही है इसे यूँ होना चाहिए—

दिल के हाथों ही तो मजबूर हुए ज़ेह्न ने 'ख़्वाब'

3. ज़िन्दगी ओर मौत का चलता रहा सिलसिला,
होते रहे रोज़ो-शब काम बराबर तिरे। (मुहम्मद अलवी)

भार—2 1 1 2 2 1 2 2 1 1 2 2 1 2

अर्कान—मुफ़्तइलुन फ़ाइलुन मुफ़्तइलुन फ़ाइलुन

बहर—मुन्सरेह मतव्वी मकसूफ़ मतव्वी मकसूफ़ मुसम्मन

इस शेर में 'ज़िन्दगी' (फ़ारसी) की 'ई' की मात्रा गिरानी पड़ेगी जो अलिफ़ वस्ल के कारण जाइज़ है इससे छन्द की लय भङ्ग हो रही है अतः यह दोष माना जाएगा।

अलिफ़ वस्ल का नियम तथा मात्रा गिरने का सम्बन्ध

मुहम्मद अलवी के उपरोक्त शेर में अलिफ़ वस्ल हो रहा है अतः "ज़िन्दगी" की मात्रा का गिरना अरूज़ के मुताबिक़ जाइज़ (उचित) माना जाएगा।

अलिफ़ वस्ल का क़ाइदा—कभी-कभी किसी मिस्रे में छन्द (बहर) की आवश्यकतानुसार दो ऐसे शब्दों को मिला कर एक कर देते हैं जिनमें एक शब्द का आरम्भ 'अ' या समान वर्ण से हो रहा हो तथा उससे ठीक पहले कोई बिना मात्रा वाला लघुवर्ण हो जैसे—

सद+उपयोग =सदुपयोग (2+2 2 1 =1 2 2 1)

शङ्कर+आचार्य=शङ्कराचार्य (2 2+2 2 1=2 1 2 2 1)

अन+आवश्यक=अनावश्यक (2+2 2 2=1 2 2 2)

दुर+आत्मा =दुरात्मा (2+2 1 2=1 2 1 2)

इक+इन्सान =इकिन्सान (2+2 2 1=1 2 2 1)

जिधर+आया =जिधराया (1 2+2 2 =1 1 2 2)

कुछ काव्यपंक्तियों को देखिए—

1. मेरे अन्दर जो इकिन्सान रहा करता है

भार—2 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 2

भार के अनुसार "इक इन्सान" (2221) को इकिन्सान (1221) कर लिया गया है क्योंकि बहर की आवश्यकता इस स्थान पर (1221) बज़्न की है (2221) की नहीं। अब यहाँ ये माना जाएगा कि 'इन्सान' की 'इ' समाप्त हो गई तथा उसकी मात्रा 'क' वर्ण को मिल गई।

2. चेहरे चेहरे पे रङ्ग-शराबा गया

भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

वज़्न के अनुसार "शराब आ" को 'शराबा' कर लिया गया है।

शराब आ (1212) के स्थान पर शराबा (122) करना बहर की ज़रूरत है। यहाँ भी ये माना जाएगा कि 'आ' का 'अ' गिर जाएगा तथा मात्रा 'शराब' के 'ब' को मिल जाएगी।

उर्दू में चूँकि मात्राएँ भी अक्षर होती हैं अतः 'ज़िन्दगी' की 'ई' मात्रा भी बिना मात्रा वाला (साकिन) एक अक्षर है अतः मुहम्मद अलवी साहब के शेर में ज़िन्दगी की 'ई' मात्रा, "और" की "औ" की मात्रा से मिल जाएगी तथा 'ज़िन्दग' रह जाएगा अतः यहाँ 'ज़िन्दगी' की मात्रा का ह्रस्व होना भी उचित है, लयभङ्ग हो जाए तो हो जाए।

वास्तव में गद्य तथा पद्य में केवल 'लय' का अन्तर होता है। 'छन्द' वास्तव में विभिन्न प्रकार की प्रवाहपूर्ण लय हैं। छन्दशास्त्र में विभिन्न नियमों का एकमेव उद्देश्य 'लय-भङ्ग' होने से बचाना मात्र है। यदि किसी भी नियम द्वारा लयभङ्ग हो तो उस नियम को अप्राकृतिक मानते हुए निरस्त कर देना चाहिए।

वास्तव में अलिफ़ वस्ल का नियम 'लय' से बँधा हुआ है मगर इसमें एक बेजा (अनुचित) पाबन्दी और लगी है—

उर्दू अक्षर 'ऐन' (ع) से आरम्भ होने वाले सभी शब्द 'अ' ही की ध्वनि रखते हैं मगर इन शब्दों में वस्ल नहीं हो सकता जबकि उर्दू के बड़े-बड़े शाइरों ने ऐसा किया है क्योंकि यह क्रिया तो 'लय' से बँधी है कई बार शाइर को पता भी नहीं चलता और 'वस्ल' (मिलन) हो जाता है। उदाहरणार्थ निम्न शेरों को देखिए—

1. आलमे-हुस्न है अजब आलम
   चाहिए इश्क़ भी इसालम का। (मीर तक़ी 'मीर')

भार—2 1 2 2 1 2 1 2 2 2

यहाँ इस तथा आलम को "इसालम" कर लिया गया है। 'आलम' ऐन से है।

2. इसी गली में इसी मकाँ में
   इकुम्र अपनी गुज़र गई है। (मुहम्मद अलवी)

भार—1 2 1 2 2 1 2 1 2 2

यहाँ इक-उम्र को "इकुम्र" कर लिया गया है। 'उम्र' ऐन से है।

3. हरिक बात अपनी लगेगी सही
   जवानी की ऐसी इकुम्राएगी। ('ख़्वाब अकबराबादी)

भार—1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

यहाँ छन्द की आवश्यकतानुसार "इक-उम्र-आएगी" को 'इकुम्राएगी' करना पड़ेगा जबकि 'उम्र' ऐन से है। मगर लय पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। वास्तव में यह पाबन्दी ग़लत है।

(सही रूप—जवानी की इक ऐसी उम्र आएगी)

उपर्युक्त समस्त विवरण में कुछ संस्कृत-उर्दू छन्द नियमों को हिन्दी तथा उर्दू के लिए अनुपयुक्त सिद्ध किया गया है।

उपर्युक्त समस्त विवरण से निष्कर्ष रूप में 'नवछन्द' के अग्र-लिखित नियम प्राप्त किए गए हैं।

नवछन्द-नियम

1. "नवछन्द" के अनुसार विभिन्न शब्दों के हिन्दी-उर्दू उच्चारण ही छन्द की मात्रा गणना के लिए वर्तमान समयानुसार उचित हैं अर्थात 'कमल्' (12) आत्मा (2 12) सरगम् (2 2) स्फूर्ति को इसफूर्ति (221) स्थान को इस्थान (221) स्थाई को इस्थाई (222)·····आदि को दिए गए नवीन भार में ही मानना चाहिए।

2. उर्दू में छन्दों (बहरों) के नाम बहुत बड़े-बड़े हो जाते हैं अतः इन सभी नामों को परिवर्तित करना होगा। संस्कृत छन्दों का रूप हिन्दी-उर्दू में परिवर्तित हो जाता है अतः संस्कृत नाम भी परिवर्तित करने होंगे। कोई भेदभाव न हो अतः "नवछन्द" में भाषागत सङ्कीर्णता से निकलकर वैज्ञानिक आधार पर छन्द-नाम रखे गए हैं।

3. शब्दों की मात्रा गिराने सम्बन्धी भेदभाव समाप्त करके यह नियम दिया जाता है कि "लय भङ्ग" होने से बचाते हुए हिन्दी, उर्दू, तुर्की, अरबी-फ़ारसी·····सभी भाषाओं के शब्दों की अन्तिम मात्रा गिरा सकते हैं।

4. 'अलिफ़-वस्ल' को 'सङ्गम' कहना उचित होगा, क्योंकि अब 'नवछन्द' के अनुसार 'ऐन' से आरम्भ होने वाले शब्द भी 'सङ्गम' में प्रयोग किए जा सकते हैं अतः 'अलिफ़' स्वतः निरर्थक है। 'सङ्गम' छोटा होने के कारण शीघ्र कण्ठस्थ होगा। अतः इस प्रकार के रूपों— अन+आवश्यक=अनावश्यक, पवित्र+आत्मा=पवित्रात्मा को 'सङ्गम' कहा जाता है। 'सङ्गम' यूँ भी हो सकता है—आप+आए=आपाए, घर+आकर=घराकर, जब+इच्छा=जबिच्छा, हम+उलफ़त=हमुलफ़त, दिल+आराम=दिलाराम·····आदि।

मात्राएँ कैसे तथा क्यों गिरती हैं ?

वास्तव में हिन्दी के अनेक छन्दशास्त्री मात्रा गिराने के नियम को अनुचित ठहराते हैं किन्तु अपने पक्ष को तर्क के साथ प्रस्तुत नहीं करते। वास्तव में मात्रा गिराना शत प्रतिशत उचित तथा प्राकृतिक बात है।

मात्रा गिरना, दीर्घ वर्ण को लघु उच्चारित करना, लघुवर्ण को दीर्घ उच्चारित करना, स्वयम हिन्दी-संस्कृत-बृज-अवधी छन्दशास्त्र में प्रचलित था, प्रचलित है और प्रचलित रहेगा। उदाहरणार्थ निम्न छन्द 'मनहरण-कवित्त' को लें—

साजि चतुरङ्ग वीर रङ्ग, में तुरङ्ग चढ़ि
सरजा सिवाजी जङ्ग जीतन चलत है।

उपर्युक्त पंक्तियों में केवल वर्ण (अक्षर) गणना होगी कोई भी मात्रा नहीं गिनी जाएगी अर्थात इस छन्द की लय ऐसी है कि सभी मात्राएँ गिर जाती हैं। इस कवित्त में प्रथम पंक्ति में 16 अक्षर तथा द्वितीय में 15 अक्षर मात्र गिने जाएँगे।*

अब इस 'सवैया (किरीट) छन्द' में रचित पंक्ति को देखें इसमें भी दीर्घ वर्ण को लघु गिना गया है—

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।।
भार—2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 1

यहाँ 'तो' तथा 'के' वर्णों को दीर्घ होते हुए भी लघु पढ़ा गया है।

वास्तव में बृज तथा अवधी दौनों ही भाषाओं में कितने ही शब्दों का रूप परिवर्तित करके प्रयोग किया जाता है तथा ये परिवर्तन मात्राएँ गिराने यानी दीर्घ को लघु बनाने का है उदाहरणार्थ ये शब्द—

नहिं (नहीं) जेहि (ये ही) दूरि (दूरी) कहि (कही)

संस्कृत शब्दों आस्था (आथा), आत्मा (आमा) रास्ताँ (रातां) के उच्चारणों में 'स्', 'त्', 'स्', आदि वर्णों को निश्चित रूप से गिराया जाता है क्योंकि उपरोक्त शब्दों के ये आधे वर्ण उच्चारण में बाधा उत्पन्न करते हैं किन्तु इन्हें वर्णगणना में शामिल नहीं करते।

संस्कृत छन्दों में अन्त में आने वाले लघु वर्ण को दीर्घ करने की छूट है जैसा कि निम्न उदाहरण में अन्तिम लघु वर्ण को छन्द की आवश्यकता के अनुसार दीर्घ कर लिया गया है—

---

* वैदिक छन्दों में भी गुरु-लघु वर्ण गणना नहीं होती बल्कि केवल अक्षर गणना होती है—
यदक्षर परिमाणं तच्छन्दः (सर्वानुक्रमणी 12.6)

1. विकासः कासारोपवनोऽपि व्यथयति (छन्द शिखरिणी)

यहाँ 'ऽपि' तथा अन्तिम 'ति' को लघु होते हुए भी दीर्घ माना जाएगा ये नियम है।

2. नाम्ना 'वसन्ततिलकां' किल तां वदन्ति (छन्द वसन्ततिलका)

यहाँ भी 'वदन्ति' का 'ति' वर्ण लघु होते हुए भी दीर्घ माना जाएगा।

आज के शत प्रतिशत फ़िल्मी गीत मात्रा गिराने के विधान को स्वीकार करते हुए लिखे जाते हैं अर्थात मात्राओं का गिरना 'गेयता' में बाधक नहीं है यानी सङ्गीत की दृष्टि से यह नियम उचित है।

निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को देखिए ये सभी रचनाएँ मात्रा गिराने तथा 'सङ्गम' के नियम के अन्तर्गत रचित हैं तथा इनमें कोई भी काव्य-दोष या उच्चारण सम्बन्धी बाधा नहीं है।

1. तुमको पाने की मन में जब इच्छा जगी
   इक पवित्र आत्मा हो गई ज़िन्दगी ।। (ख़्वाब)

भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

उपर्युक्त पंक्तियाँ छन्द स्रिग्विणी (संस्कृत) जिसे उर्दू में बहरे मुतदारिक सालिम मुसम्मन कहते हैं, में रचित हैं। मात्राएँ **को, की,** गिर रही हैं, तथा जब-इच्छा में सङ्गम हो कर **'जबिच्छा'** हो रहा है। पवित्र-आत्मा में सङ्गम होने से **'पवित्रात्मा'** हो रहा है। **'आत्मा'** शब्द को हिन्दी उच्चारण के अनुसार (212) वज़न पर लिया गया है।

2. आतिशे-इश्क़ ने रावण को जलाकर मारा (मीर)

3. एक ही शहर में रहते हैं न रहने की तरह (रऊफ़ ख़ैर)

4. जुस्तजू हो तो सफ़र ख़त्म कहाँ होता है (ताबाँ)

5. इस तरह रोने से ग़म और घनेरा होगा (उर्मिलेश)

6. जब से इस दौर ने बच्चों को दिए हैं हथियार
   (के. के. सिंह 'मयङ्क')

भार—2 1 2 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 2 या 1 1 2

मीर ने, 'ने', को वर्णों की मात्राएँ गिराई हैं। मगर लय भङ्ग नहीं हुई है।

रऊफ़ ने, में, हैं वर्णों की मात्राएँ गिराई हैं।

ताबाँ ने, 'तो' वर्ण की मात्रा गिराई है।

उर्मिलेश ने, रोने, से, वर्णों की मात्राएँ गिराई हैं।

मयङ्क ने, ने, को वर्णों की मात्राएँ गिराई हैं।

उपर्युक्त मात्राएँ गिरने का छन्द की लय तथा प्रवाह पर कोई असर नहीं पड़ रहा है। ये रचनाएँ पूर्णतः सङ्गीत बद्ध हैं।

वास्तव में मात्रा गिराने के नियमान्तर्गत काव्य सृजन करने पर 'कथ्य' तथा 'भाषा' अति परिष्कृत रूप में दिखाई पड़ते हैं।

उपर्युक्त समस्त विवरण से ये प्रमाणित होता है कि मात्रा गिराने का नियम तथा 'सङ्गम' नियम पूर्णतः उचित हैं तथा आधुनिक हिन्दी एवं उर्दू में इनका प्रचलन है तथा रहेगा।

वास्तव में वही मात्राएँ गिरानी चाहिए जो छन्द विशेष की लय के अनुसार स्वतः दब कर आ रही हों ज़बरदस्ती किन्हीं मात्राओं को गिराना छन्द की लय-भङ्ग करता है, चाहे मात्रा हिन्दी हो या अरबी-फ़ारसी !!

नवछन्द गणना पद्धति

'नवछन्द' में एक नवीन गणना-पद्धति का प्रयोग किया गया है। यह नवीन गणना पद्धति संसार भर की भाषाओं की काव्य गणना के लिए उपयुक्त है तथा प्रयोग की जा सकती है। वास्तव में सभी भाषाओं का काव्य दीर्घ तथा लघु आवाज़ों से मिल कर बनता है अतः 'नवछन्द' गणना पद्धति में केवल दीर्घ व लघु आवाज़ों के प्रतीक रूप का प्रयोग किया गया है। 'नवछन्द पद्धति' का सम्बन्ध हिन्दी-उर्दू से है अतः पहले हिन्दी तथा उर्दू वर्णगणना पद्धति को निरस्त करने का कारण लिखना उचित होगा।

हिन्दी-काव्य-वर्णगणना

हिन्दी, अवधी, बृजभाषा में काव्य वर्णगणना पद्धति, संस्कृत वर्ण गणना पद्धति ही है अर्थात किसी काव्य पंक्ति में लघु वर्ण (बिना मात्रा या छोटी मात्रा वाला वर्ण) तथा दीर्घ वर्ण (बड़ी मात्रा वाला या आधे वर्ण के मिलने से बना वर्ण) की गणना की जाती है। हम लघु वर्ण

के लिए 1 तथा दीर्घ वर्ण के लिए 2 का प्रयोग कर रहे हैं उदाहरणार्थ निम्न काव्य पंक्ति में वर्णगणना को देखिए—

1. इन्द्रनी लोपले नैव या निर्मिता

भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2 (छन्द स्रिग्विणी)

2. देखते देखते हो सवेरा गया

3. 'काविश' ख़ुश घर के सभी, तू क्यों रहे उदास
   जग में सदा सपूत को, मिलता है वनवास

प्रथम पंक्ति—2 1 1 1 1 1 1 2 1 **2** 2 2 1 2 1 2 1

द्वितीय पंक्ति—1 1 2 1 2 1 2 1 2 1 1 **2** 2 1 1 2 1 (दोहा)

यदि हम हिन्दी उच्चारण के अनुसार उपर्युक्त दोहे में वर्णक्रम लिखें तो वह भिन्न होगा। वह क्रम निम्नाङ्कित होगा—

प्रथम पंक्ति—2 2 2 2 2 1 **2** 2 2 1 2 1 2 **1**

द्वितीय पंक्ति—2 2 1 2 1 2 1 2 2 2 2 2 2 1

वास्तव में हिन्दी उच्चारण वाली वर्ण गणना ठीक तथा उचित है आज समय तेज़रफ़्तारी का है अतः किसी भी भाषा के शब्दों में हलन्त वर्णों (साकिन की संख्या जितनी अधिक होगी वह भाषा कम समय में अधिक बात कहने में समर्थ होगी।

'यमाताराजभानसलगं'—इस सूत्र से हिन्दी काव्य-गणना के निम्न सूत्र प्राप्त होते हैं। वास्तव में ये सूत्र विभिन्न क्रम में लगी मात्राओं अर्थात लघु व दीर्घ वर्णों के क्रम के प्रतीक रूप हैं।

1. **यगण**—1 2 2 मात्राएँ अर्थात एक लघु दो दीर्घ वर्ण
2. **मगण**—2 2 2 मात्राएँ अर्थात तीन दीर्घ वर्ण
3. **तगण**—2 2 1 मात्राएँ अर्थात दो दीर्घ वर्ण एक लघु वर्ण
4. **रगण**—2 1 2 मात्राएँ अर्थात प्रथम दीर्घ फिर लघु फिर दीर्घ वर्ण
5. **जगण**—1 2 1 मात्राएँ अर्थात प्रथम लघु फिर दीर्घ फिर लघु वर्ण

6. **भगण**—2 1 1 मात्राएँ अर्थात प्रथम दीर्घ फिर दो लघु वर्ण

7. **नगण**—1 1 1 मात्राएँ अर्थात तीन लघु वर्ण

8. **सगण**—1 1 2 मात्राएँ अर्थात प्रथम दो लघु फिर एक दीर्घ वर्ण

चूँकि अब हिन्दी उच्चारण में लघु दीर्घ वर्णों की **परिभाषा** ही बदल गई है अतः उपर्युक्त सूत्र स्वतः अनुपयोगी हो गए हैं।

उदाहरणार्थ 'अगर' शब्द जो पहले तीन लघु वर्ण के अनुसार 'नगण' के अन्तर्गत आता वह हिन्दी उच्चारण के अनुसार 12 अर्थात अ+गर् अर्थात एक लघु एक दीर्घ वर्ण होगा। इसी प्रकार सरगम, झरना, कर्मठ, अन्तर्गत आदि शब्दों का नया लघु-दीर्घ वर्ण क्रम उपर्युक्त गणों का वहन करने वाले छन्दों में लयभङ्ग का कारण बनेगा तथा ग़लत कहलाएगा। यही बात मात्रिक छन्द गणना में भी आएगी अतः इस पद्धति को निरस्त करना उचित है। इसके अतिरिक्त इस पद्धति का एक दोष यह भी है कि यह छन्द की लय को पूर्णतः स्पष्ट नहीं करती अर्थात छन्द स्रिग्विणी हेतु 'चार रगण' लिखने से लय स्पष्ट नहीं होती या छन्द भुजङ्गप्रयात हेतु 'चार यगण' लिखने से लय स्पष्ट नहीं होती।

वास्तव में 'छन्द सूत्र' ही से सम्पूर्ण लय, मात्राएँ स्पष्ट हो जानी चाहिए उर्दू छन्दसूत्रों में ऐसा है किन्तु यह छन्दसूत्र उच्चारण दोष तथा अन्य गम्भीर दोषों के शिकार हैं।

उर्दू छन्दों की वर्ण गणना पद्धति

उर्दू छन्दशास्त्र में भी हिन्दी-संस्कृत की भाँति लघु-दीर्घ वर्णों की गणना होती है किन्तु उच्चारण भेद होने के कारण लघु-दीर्घ वर्णों की मान्यता में अन्तर होता है। उदाहरणार्थ निम्न पंक्ति को देखिए।

1. बेख़ुदी में सनम उठ गए जो क़दम
(बहर मुतदारिक छन्द स्रिग्विणी)

भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

उपर्युक्त पंक्ति पूर्णतः सङ्गीतबद्ध तथा "लयबद्ध" है किन्तु छन्द स्रिग्विणी के अनुसार ग़लत है क्योंकि इस पंक्ति का संस्कृत के अनुसार

वर्ण क्रम यूँ होगा—2 1 2 2 1 1 1 1 1 1 2 2 1 1 1 जो छन्द स्रिग्विणी का वज़न नहीं है। किन्तु यह पंक्ति छन्द स्रिग्वणी की 'लय' पर पूर्णतः खरी-खरी है।

उर्दू में भी आठ अर्कान (गण) होते हैं जिनके विभिन्न क्रमों में मिलने से विभिन्न उर्दू छन्दों यानी बहरों का निर्माण होता है—

1. **मफ़ाईलुन**=1 2 2 2 यानी पहला लघुवर्ण फिर तीन दीर्घवर्ण
2. **फ़ाइलातुन**=2 1 2 2 पहला दीर्घ फिर लघु फिर दो दीर्घवर्ण
3. **मुस्तफ़इलुन**=2 2 1 2 पहले दो दीर्घवर्ण फिर लघु फिर दीर्घ वर्ण
4. **मुतफ़ाइलुन**=1 1 2 1 2 पहले दो लघु फिर दीर्घ फिर लघु फिर दीर्घ वर्ण
5. **मफ़ऊलातु**=2 2 2 1 पहले तीन दीर्घ वर्ण फिर एक लघु वर्ण
6. **मुफ़ाइलतुन**=1 2 1 1 2 पहला लघु फिर दीर्घ फिर दो लघु फिर दीर्घ वर्ण
7. **फ़ाइलुन**=2 1 2 पहला दीर्घ फिर लघु फिर दीर्घ वर्ण
8. **फ़ऊलुन**=1 2 2 पहला लघु वर्ण फिर दो दीर्घ वर्ण

उर्दू छन्द सूत्र लिखने से छन्द विशेष की लय पूर्णतः स्पष्ट होती है जैसे—फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन (बहर मुतदारिक)

भार—2 1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2

किन्तु उपर्युक्त आठ अरकान में अधिकांश का उच्चारण बेहद अटपटा है। इसके अतिरिक्त ज़िहाफ़ के प्रयोग से बने मुज़ाहिफ़ अरकान जैसे— फ़ाईलु (मफ़ऊलु), फ़ाआतन (मफ़ऊलुन), फ़इलातान (फ़इलययान) मुस्तइलुन (मुफ़्तइलुन), मुतइलुन (फ़इलतुन)·····का उच्चारण पूर्णरूपेण अटपटा है।

ज़िहाफ़ प्रक्रिया के कारण बने उपछन्दों के लम्बे-2 नाम पूर्व में आ ही चुके हैं तथापि एक बहर का नाम ज़िहाफ़ के प्रयोग के साथ और लिख रहा हूँ—

बहर हज़ज मुसद्दस सालिम के एक उपछन्द को देखिए—

1. बहर हज़ज मुसद्दस सालिम—मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन

2. बहरे हज़ज अख़रब मक़्बूज़ महज़ूफ़ मुसद्दस
अर्कान—मफ़ऊलु मुफ़ाइलुन फ़ऊलुन

देख सकते हैं कि बहर का नाम बहर से अधिक लम्बा है। उर्दू की अधिकांश बहरों के साथ ऐसा है।

उर्दू छन्दों के क़ाइदे "ज़िहाफ़" ने उर्दू छन्दशास्त्र को सीमित कर दिया है अर्थात बहुत सारे मीठे प्रवाहयुक्त, सङ्गीतबद्ध छन्द, उर्दू छन्द-शास्त्र के अनुसार ग़लत हैं या वहाँ नहीं हैं—

1. **2** 1 2 2 1 2 1 2 1 2 1 2 2 2

2. 2 1 **2** 1 2 1 1 2 2 1 1 2 **2**

3. 2 1 2 **2** 1 1 2 2 1 2 1 2 2 2

4. 1 2 **1** 2 1 1 2 2 1 1 2 2 2 2

उपर्युक्त क्रमों में लगे लघुदीर्घ वर्णों वाले छन्द उर्दू छन्दशास्त्र में नहीं हैं/न हो सकते हैं।

वास्तव में उर्दू अरूज़ में ज़िहाफ़ के अनर्गल नियम के कारण एक ही छन्द के अनेक नाम होते हैं उदाहरणार्थ यदि किसी छन्द की लय निम्न क्रम में लगे लघु-दीर्घ वर्णों वाली है—

1. **भार**—2 1 2 2 1 2 1 2 2 2

हम इसे बहरे ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून मख़्बून मुसक्किन महज़ूफ़ भी कह सकते हैं और बहरे मुशाकिल मक़्बूज़ अबतर मुसद्दस भी कह सकते हैं।

2. **भार**—1 2 1 2 1 2 1 2

हम इस वज़न को हज़ज मुरब्बा मक़्बूज़ भी कह सकते हैं और बहरे रजज़ मुरब्बा मख़्बून भी कह सकते हैं।

इस प्रकार के अनगिनत उदाहरण मिल जाएँगे। अतः यह ज़िहाफ़ प्रणाली तथा नाम दौनों अनुपयोगी हैं। अतः इसे भी रद्द कर दिया गया है।

□□

अहले-उर्दू से गुज़ारिश

जैसा कि आप और हम सभी जानते हैं कि उर्दू भारत में पैदा हुई और परवान चढ़ी है उर्दू भी पूर्णतः भारतीय भाषा है ।

कि उर्दू में हिन्दी, बृज, संस्कृत, अवधी, अँग्रेज़ी, तुर्की, अरबी, फ़ारसी.....ज़बानों के अल्फ़ाज़ हैं तथा व्याकरण मूलतः हिन्दी तथा अंशतः फ़ारसी है ।

कि उर्दू में अरबी-फ़ारसी का ख़लील बिन अहमद द्वारा बनाया अरूज़े-ख़लीलिया शाइरी यानी कविता में प्रयोग किया जाता है यानी अरबी-फ़ारसी छन्दों का प्रयोग उर्दू में होता है ।

कि अरबी-फ़ारसी अरूज़ उर्दू के लिए पूर्णतः उपयुक्त नहीं है अनेक अरबी-फ़ारसी बहर और अरूज़ी क़वाइद (छन्द तथा नियम) उर्दू शाइरी पर बार हैं उर्दू शाइरी ही पर नहीं बल्कि आहङ्ग (सङ्गीत) पर भी ये क़वाइद बार हैं तभी तो दर्जे ज़ैल (निम्नलिखित) अशआर शेरियत, रवानी और आहङ्ग के पैमाने पर एकदम सहीह होते हुए भी अरूज के मुताबिक़ ग़लत हैं—

1. किरन किरन अलसाता सूरज
   पलक पलक खुलती नींदें
   धीमे धीमे बिखर रहा है
   ज़र्रा ज़र्रा जाने कौन ?
   —निदाफ़ाज़ली

2. तनहा तनहा घूम रहा हूँ गुमसुम
   गली गली कोई ख़ुद सा ढूंढ रहा हूँ ।
   —कुमारपाशी

3. दसों दिशा के फेर में कैसे साँझ सवेरा बीत गया,
   पंख लगे हैं हाथ में जैसे चक्की बँधी है पाओं में ।
   —शाहिद माहुली

4. गरज बरस प्यासी धरती पर फिर पानी दे मौला,
चिड़ियों को दाने बच्चों को गुड़धानी दे मौला।

—**निदा फ़ाज़ली**

उपर्युक्त सभी शेर भारत के मोतबर शोरा के हैं और ये सभी अशआर 'अरूज़े नौ' यानी नवछन्द के मुताबिक़ सहीह हैं।

"**नवछन्द**" और "**अरूज़े-नौ**" एक ही किताब है फ़क़त रस्मुलख़त (लिपि) का फ़र्क़ है। '**नवछन्द**' पहले आ गया है '**अरूज़े-नौ**' (उर्दू में) बाद में आएगा।

अगर आप नवछन्द यानी 'अरूज़े-नौ' के क़वाइद से इत्तफ़ाक़ रखते हैं तो बइनायत एक पोस्ट-कार्ड मेरे पास ज़रूर इरसाल कर दें ताकि अरूज़े-नौ को एक ज़मीन मिल सके। ख़ास ख़ुतूत यानी किन्हीं नुकात की ज़ानिब तवज्जो करने वाले साहिबान के ख़ुतूत 'अरूज़े-नौ' में शाए किए जाएँगे।

हक़ीर
'ख़्वाब'

□□

'छन्द' कविता की आत्मा है !

रुबाई

उस्ताद है, माहिर है, उसे जान हबीब
कहता है जो 'ख़्वाब' वही मान हबीब
है जिस्मे-सुख़न ख़यालो-अल्फ़ाज़, मगर
है रूहे-सुख़न अरूज़ पहचान हबीब ।।

(अर्थ—ऐ मित्र ! 'ख़्वाब' अकबराबादी एक फ़न का माहिर-उस्ताद है अतः वह जो कहता है उसे तू मान ले कि कविता का शरीर 'भाव' तथा 'भाषा' हैं मगर कविता की 'आत्मा' छन्द है)

प्राचीन भारतीय काव्य साहित्य में कभी यह विवाद उत्पन्न नहीं हुआ कि 'काव्य' का 'मूल तत्व' अथवा 'आत्मा' क्या है ? इसका कारण था/है कि उस समय लोग व कवि काव्य मर्मज्ञ हुआ करते थे । तब असीमित संख्या में कवि नहीं थे । आज जिसे देखो वही कवि है ..... अस्तु ।

',कविता की आत्मा 'छन्द' है अथवा 'भाव' ?"

उपर्युक्त प्रश्न का तर्क सङ्गत समाधान इस लेख में किया जा रहा है । 'निर्णय' पाठकों तथा कवियों पर छोड़ा गया है—मेरा आप सभी पाठकों से एक प्रश्न है जिसका उत्तर भी मैं आप सबकी ओर से स्वयम् लिख रहा हूँ क्योंकि मेरे प्रश्न का यही एक 'उत्तर' है ।

प्रश्न—'शरीर' तथा 'आत्मा' में से आँख से क्या दिखाई देता है ?

उत्तर—'शरीर' आँख से दिखाई देता है, 'आत्मा' नहीं ।

मेरा यह तर्कसङ्गत लेख आप उपर्युक्त 'प्रश्नोत्तर' को ध्यान में रखते हुए पढ़ें तथा निर्णय करते समय इसे एक बार पुनः पढ़ें ।

'गीता' के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि एक ही आत्मा, मनुष्य, हाथी घोड़े ..... कीड़े मकोड़े ..... आदि विभिन्न-शरीर धारण तथा करती

है। इन सभी शरीरों को आकृति भिन्न-भिन्न है किन्तु 'आत्मा' स्थिर है उसका रूप परिवर्तित नहीं होता अर्थात 'परिवर्तन' शरीर का लक्षण है—'भाव' काव्य का शरीर है क्योंकि यह परिवर्तनशील है। एक ही भाव की विभिन्न आकृतियाँ हो सकती हैं उदाहरणार्थ मैं तीन विभिन्न भाषाओं में एक भाव की विभिन्न आकृतियाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ—

(1) हिन्दी	(2) उर्दू	(3) अंग्रेजी
प्रिय	अज़ीज़ (अ)	डियर
टहलना	ख़िराम (फ़)	वाकिङ्ग
श्रीमान	जनाब	मिस्टर
पारङ्गत	माहिर	एक्सपर्ट

मैं समझता हूँ कि अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है एक ही भाव की विभिन्न आकृतियाँ आपने देख ली होंगी, भाव का सम्बन्ध भाषा से है।

जब आप कोई 'कविता' लिखी देखते हैं तो आपको भाव दिखाई पड़ता है अथवा 'छन्द'? उत्तर सहज है कि 'भाषा विशेष' में लिखित भाव दिखाई पड़ता है छन्द तो 'भाव' में विलीन रहता है ठीक उसी प्रकार जैसे 'शरीर' में 'आत्मा' विलीन रहती है—'छन्द को आँख से देखा नहीं जा सकता किन्तु जिस प्रकार 'योगी-जन' अपनी 'आत्मा' की पृथक अनुभूति करने में सक्षम होते हैं ठीक इसी प्रकार काव्य-मर्मज्ञ 'छन्द' की अनुभूति करने में सक्षम होते हैं।

जब आप कोई 'कविता' सुनते हैं तो उस समय भी 'भाव' ध्वनि की आकृति (शरीर) ग्रहण कर आप तक पहुँचता है—

वास्तव में कोई 'भाव' कितना ही श्रेष्ठ क्यों न हो वह 'कविता' तब तक नहीं कहलाएगा जब तक कि उसे 'छन्द रूपी' आत्मा की प्राप्ति नहीं होगी। 'गद्य' तथा 'पद्य' की विभाजन रेखा भी 'छन्द' के माध्यम ही से खींची जा सकती है। वास्तव में शरीर व भाव विकृत भी होते हैं किन्तु 'आत्मा' व 'छन्द' विकृत नहीं होते।

कविता' की हत्या करने वाले उसे मृत समझ बैठे थे किन्तु भला कभी 'आत्मा' नष्ट होती है ? आज ग़ज़ल के रूप में हिन्दी कविता पुनः जनमानस को प्रभावित कर रही है तथा **गीता के इस सिद्धान्त का प्रतिपादन कर रही है कि आत्मा अजर-अमर है आत्मा बार-बार शरीर धारण करती है पहले 'गीत' 'कविता' का शरीर था, अब 'ग़ज़ल' का शरीर 'छन्दरूपी आत्मा' ने धारण कर लिया है।**

'कविता' को भाषा की 'आत्मा' कहा जाता है जिस भाषा की कविता उन्नति करेगी वह भाषा भी निश्चय ही उन्नति करेगी 'हिन्दी' संस्कृत के बाद विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा है किन्तु हिन्दी को अपने देश में भी वो सम्मान प्राप्त नहीं हुआ जिसकी वह हक़दार है इसका कारण है **'हिन्दी कविता कमजोर है** (मैं विचार की बात नहीं कर रहा हूँ' जिस दिन हिन्दी कविता की उन्नति होगी हिन्दी विश्व की सिरमौर बन जाएगी। मैं जानता हूँ कि ऐसा होगा **क्योंकि संसार के सर्वाधिक बुद्धिमान लोग भारतवर्ष में रहते हैं, संसार को ज्ञान भारत ही से प्राप्त हुआ है।**

हिन्दी का ये दुर्भाग्य है कि विषय विशेष से पूर्णतः अनभिज्ञ लोग विषय विशेष पर निर्णायक व्याख्यान देते हैं तथा सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हैं। कविता के विषय में यही हुआ, निराला, पन्त ने स्वयम ''छन्दबद्ध'' कविता से प्रतिष्ठा प्राप्त की किन्तु बाद में 'जनकवि' बनने के प्रयास में 'कविता' को जनभाषा प्रदान करते हुए **काव्य नियमों को तोड़ दिया कोई भी नियम जब टूटता है तो सदैव विध्वंस तथा विकृति को जन्म देता है यही हिन्दी कविता के साथ हुआ 'कविता' का नाश हो गया विचार तथा गद्य-पंक्तियाँ कविता कहलाने लगीं—'छन्द' को लोगों ने कविता का 'बन्धन' कहना शुरू कर दिया, जबकि वास्तव में 'छन्द' तो कविता की आत्मा, मूल तत्व तथा नियम है।**

वास्तव में कविता के बन्धन हैं रदीफ़ तथा क़ाफ़िया (तुक) अथवा विशेष प्रकार के चरण (पंक्ति) वाले बन्द। क़ाफ़िया तुकान्त को कहते हैं तथा रदीफ़ तुक के बाद आने वाले अपरिवर्तनीय शब्द या शब्द समूह को कहते हैं।

उदाहणार्थ—फ़लक ही छत है जहाँ ऐसे घर में रहता हूँ
मिरा मिज़ाज है **अक्सर** सफ़र में रहता हूँ।

इस में 'घर' तथा 'सफ़र' तुक तथा 'में रहता हूँ' शब्द समूह 'रदीफ़' है। वास्तव में यह पाबन्दियाँ तथा 2, 3, 4"""""पंक्तियों की बन्द व्यवस्था, मुखड़ा आदि कविता के बन्धन हैं। वास्तविक कविता तो 'अतुकान्त' ही होती है। संस्कृत की प्राचीन कविता अथवा 'वेद' रूपी काव्य में कहीं भी 'तुकान्त' का प्रयोग नहीं मिलता। वास्तव में अतुकान्त कविता भी काव्य तथा छन्द नियमों के अन्तर्गत ही लिखी जाती है, रची जाती है। अतुकान्त कविता में तुक तथा 'बन्द' व्यवस्था के अतिरिक्त कविता के सभी गुण होते हैं। किसी भी अतुकान्त कविता में नियम-विरुद्ध एक अक्षर का भी स्थान परिवर्तन नहीं हो सकता, प्रस्तुत अतुकान्त कविता 'मजबूर' को देखिए इसमें एक अक्षर भी इधर-उधर करना सम्भव नहीं ऐसा इसलिए है कि यह आत्मा युक्त रचना है जिस प्रकार 'जीवित शरीर में काट-छाँट नहीं कर सकते उसी प्रकार 'कविता' में यह सम्भव नहीं है जबकि उसी भाव 'मजबूर' को गद्य रूप में वहन करने वाली अन्य तीनों रचनाओं में आप कोई भी परिवर्तन कर सकते हैं क्योंकि यह निर्जीव रचनाएँ हैं यहाँ मात्र 'भाव' रूपी शरीर है 'छन्द' रूपी आत्मा नहीं !

प्रिय पाठकों ! अपना निर्णय मुझे अवश्य बताइए—

---

1. 'मजबूर' (छन्दहीन)

मुझे ऐसा लगता है
कि मेरी ज़िन्दगी का हर क़रीना
इस दुनिया की भीड़ में खो गया है
और मैं ख़ुद भी
इस भीड़ के साथ-साथ
दौड़ता जा रहा हूँ""""""
इस भीड़ की न तो दिशा निश्चित है
""""न रस्ता निश्चित है""""न मंज़िल निश्चित है
यह अफ़सोस की बात है
कि मैं भी इस भीड़ में शामिल हूँ
मगर, मैं क्या करूँ ?
मैं 'मजबूर हूँ"""""""

2. 'मजबूर' (छन्दहीन)

इस जहाँ की भीड़ भाड़ में
मेरी ज़िन्दगी का एक इक क़रीना
खो गया है""""
भीड़ भी अजीब 'शै' है
न निश्चित राह""""
न निश्चित मंज़िल""""
न निश्चित दिशा""""
ये सब जानते हुए भी
मैं अन्धों की तरह
भीड़ के साथ हूँ
कभी-कभी बड़ा अफ़सोस होता है
मगर मैं कुछ कर नहीं सकता
मैं अपने हालात से मजबूर हूँ।

3. 'मजबूर' (छन्दहीन)

मेरी ज़िन्दगी का
एक एक क़रीना
जैसे इस जहाँ की भीड़ में खो गया है
बेबस हुआ मैं ख़ुद भी
भीड़ के साथ-साथ दौड़ता जा रहा हूँ
इस भीड़ की न तो दिशा निश्चित है
न मंज़िल निश्चित है····
न रास्ता निश्चित है····
मुझे इस बात का बेहद अफ़सोस है
कि मैं इस भीड़ में शामिल हूँ
लेकिन मैं क्या करूँ ?
मैं 'मजबूर' हूँ ।

×

उपर्युक्त तीनों रचनाओं में भाव की आकृति परिवर्तित हो गई किन्तु यह 'कविता' नहीं हैं कविता से अनभिज्ञ लोग इन्हें कविता समझते हैं ।

यह रचना कविता है

'मजबूर' (छन्द-गतिका)

ज़िन्दगी का हर क़रीना
खो गया है भीड़ में
दौड़ता ही जा रहा हूँ
साथ मैं भी भीड़ के
भीड़ भी ऐसी
कि जिसकी इक दिशा निश्चित नहीं
कोई मंज़िल भी नहीं, और
कोई रस्ता भी नहीं
मैं भी इसके साथ हूँ
अफ़सोस की यह बात है
क्या करूँ ?
मजबूर हूँ····
उफ़ ! किस क़दर मजबूर हूँ ।

×

उपर्युक्त रचना में 'छन्द रूपी आत्मा' भावाकृति में प्रविष्ट हो गई है जैसे किसी निर्जीव प्राणी में प्राण का संचार होते ही वह क्रियाशील हो जाता है वैसे ही इस 'भावाकृति' को गति व परिवर्तन प्राप्त हुआ—विज्ञ जानते हैं कि यही कविता है ।

यह तो सम्भव है—
कि कोई कविता भावहीन हो·····
कि कोई कविता रसहीन हो·····
कि कोई कविता अलङ्कारहीन हो·····
कि कोई कविता तुकहीन हो·····
लेकिन ये कभी सम्भव नहीं कि कविता छन्दहीन हो ।

देवनागरी

● पण्डित ओउम् प्रकाश शर्मा

सामान्यतः इस कथन से सभी परिचित हैं कि संस्कृत भाषा को "देवभाषा" कहा जाता है इसी परिप्रेक्ष्य में, चूँकि हिन्दी भाषा की लिपि (लिखने का ढंग या स्वरूप) संस्कृत भाषा की लिपि के ही अनुरूप है अतः हिन्दी भाषा लिपि को 'देवनागरी लिपि' कहा जाता है। हिन्दी की लिपि को 'देवनागरी' कहना स्वतः ही हिन्दी को विश्व की समस्त भाषाओं का सिरमौर प्रतिष्ठित कर देता है। हिन्दी को यह महामण्डित गौरव अकारण ही प्राप्त नहीं है। फिर भी आज के तथाकथित वैज्ञानिक युग में प्रश्न किया जा सकता है कि कहीं यह आत्मप्रशंसा तो नहीं है अथवा वास्तव में हिन्दी लिपि देवलिपि है और समस्त भाषाओं में श्रेष्ठ है इस आशंका के उत्तर में हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि हिन्दी हाँ ? लिपि ही देव या ईश्वरीय लिपि है और ईश्वर के अन्य असंख्य रहस्यों की तरह यह गूढ़तम रहस्य भी स्वयंसिद्ध है बस खोज करने वाला चाहिए। इन रहस्यों की खोज कर लेना ही विज्ञान है ईश्वर पूर्णतः शुद्ध एक तत्व है और शुद्धतम वस्तु तभी परम शुद्ध रूप में, पूर्णतः जानी जा सकती है जब जानने वाली वस्तु भी पूर्ण शुद्ध हो, अतः ईश्वर तत्व को सिद्ध करने हेतु या साक्षात्कार करने हेतु साधक मनुष्य को भी पूर्णतः शुद्ध होना पड़ता है और यही धर्मात्मा लोगों या शास्त्रों की प्रक्रिया है। अतः यदि आप उस ईश्वरीय लिपि को स्वयं देखना चाहते हैं तो आपको अभीष्ट प्रक्रिया का अनुसरण करना होगा क्योंकि हम किसी विषय को कितने ही वैज्ञानिक रूप से अथवा भाषा या आचरण से अभिव्यक्त करें तदपि पूर्णतः स्पष्ट नहीं किया जा सकता अर्थात् अमुक वस्तु का शुद्ध रूप में ज्ञान तभी सम्भव है जब हम स्वयं ही वह वस्तु बन जाएँ।

ईश्वर का प्रथम स्वरूप "प्रकाश" है एवं द्वितीय स्वरूप "शब्द" है जो ईश्वर को अभिव्यक्त करने में प्रयोजनीय है इस हेतु उसे "शब्द-ब्रह्म" कहा जाता है। ईश्वर ने शब्द के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने हेतु गिरा यानी वाणी को आधार बनाया और उसे स्वरूप दिया "अक्षर" का यानी जिसका कभी क्षरण (नाश) नहीं होता वह है अक्षर।

ये अक्षर (वर्ण) प्रत्येक मानव के शरीर में खुदे हुये हैं स्पन्दन रूप में और यही वह प्रमाण है जो हिन्दी/संस्कृत लिपि को देवनागरी की महिमा प्रदान करता है। इन अक्षरों को एक प्रकार की वैज्ञानिक प्रक्रिया (साधना) द्वारा आप स्वयं देख सकते हैं। जब भावना के साथ प्राणवायु का संचालन किया जाता है तो वही ध्वनि (आवाज़) उभरेगी/गूँजेगी जो हम लोग बोलते हैं या सुनते हैं। हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं की बनावट/लिपि अलग प्रकार की (मानवकृत) है किन्तु उनके वर्णों/अक्षरों के उच्चारण वही हैं जो हिन्दी के अक्षरों में निहित हैं यह हिन्दी की दूसरी विशेषता है और यही कारण है कि चाहे आप या अन्य कुछ भी बोलें सब कुछ हिन्दी भाषा में लिखा जा सकता है जबकि अन्य भाषाओं में ऐसा सम्भव नहीं। जैसे अँग्रेजी का अक्षर Y (वाई), Z आदि हो चाहे भैंस का रँभाना एंऽऽ ओंऽऽ या पशु पक्षिओं का चिं-चीं""खों-खों""आदि कुछ भी हो उसको हिन्दी भाषा में ही लिखा जा सकता है अन्य किसी भाषा में नहीं।

इस तरह निष्कर्ष निकलता है कि प्रकृति की शाब्दिक अभिव्यक्ति उन्हीं शब्दों में होती है जो हिन्दी/संस्कृत के हैं। यह हिन्दी की तीसरी आधारभूत विशेषता है। उपर्युक्त कथनों को स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण देखिए—

(1) किसी भी देश का बच्चा हो वह अंगा (अम्मा) या ओं-ओं (ओम) ही बोलेगा या रोएगा जो हिन्दी के शब्द हैं वह उस देश की भाषा में नहीं रोएगा या बोलेगा। आवाज़ देने पर वह चौंककर आँ (हाँ) कहेगा यस (Yes) आदि नहीं।

(2) पेट भरने पर डकार आए तो उस शब्द का उच्चारण भी "ओउम्" ही निकलता है जो हिन्दी का है।

(3) जब अधिक शक्ति का भूचाल आए तो उस समय होने वाले शब्द को ध्यान से सुनें तो आप पाएँगे कि पृथ्वी से निकलने/गूँजने वाला

वह शब्द दीर्घ ओउम् है यानी ओऽऽऽ उऽऽम्। इससे सिद्ध होता है कि जड़ पदार्थों से निकलने वाले स्वर भी वही हैं जो हिन्दी के हैं।

(4) विशेषता— पुनश्च प्रत्येक मनुष्य के शरीर में विद्यमान इन अक्षरों का प्रत्यक्ष, भौतिक उपकरणों द्वारा नहीं कर सकते। ये अक्षर ही शिवजी के डमरू से निकने वाले 14 सूत्र हैं यानी संस्कृत की वर्णमाला को वाह्य आध्यात्म का रूप देते हुए व्यवस्थित किया गया जिसे हिन्दी वर्ण-माला के रूप में जाना जाता है। यह व्यवस्था वैज्ञानिक भी है। ये वर्ण शरीर में 6 स्थानों पर स्थित हैं आध्यात्मिक भाषा में इन्हें योग नाड़ी कहते हैं। इन 6 स्थानों को षट्चक्र/कमल कहते हैं। इन चक्रों के अलग-2 देवता (स्वामी) हैं जो अपने-2 क्षेत्र की व्यवस्था को संचालित करते हैं। ये चक्र योग साधना से ही देखे जा सकते हैं जो इस प्रकार हैं।

(1) **मूलाधार चक्र**—इस चक्र/कमल की चार पंखुड़ियाँ हैं प्रत्येक पर एक-2 अक्षर अंकित है जो पुरानी पाण्डुलिपियों में लिखित मोटे से अक्षर हैं। ये हैं—वं शं षं सं जैसे ही आप ध्यानावस्था में तत्वों के दर्शन की स्थिति में पहुँचते हैं तब सहसा आपको कोयले जैसा एक धब्बा दिखाई देगा तत्पश्चात् वे उर्युपक्त बीज अक्षर स्पष्ट होंगे जिन्हें कोई भी साधक साक्षात् कर (देख) सकता है। मूलाधार गुदा से दो अंगुल ऊपर और लिंग स्थान से दो अंगुल नीचे है।

(2) **स्वाधिष्ठान चक्र**—लिंग के पीछे स्थित है यहाँ के कमल (चक्र) की 6 पंखुड़ियाँ हैं जिन पर स्थित अक्षर हैं—बं भं मं यं रं लं।

(3) **मणिपुर चक्र**—नाभि में स्थित—इस कमल के 10 दल (पंखुड़ियाँ) हैं जिन पर 10 अक्षर हैं—डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं।

(4) **अनहत चक्र**—हृदय स्थान—इस कमल में 12 दल हैं जिन पर अक्षर हैं—कं खं गं घं ङं चं छं जं झं त्रं टं ठं।

(5) **विशुद्ध चक्र**—कण्ठ स्थान—इस कमल में 16 दल हैं जिन पर अक्षर हैं—अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः।

(6) **आज्ञा चक्र**—स्थान भ्रूमध्य—इस कमल के दो दल हैं जिन पर दो अक्षर हैं—हं क्षं।

अपरञ्च, भारत एक आध्यात्मिक देश है और इसकी भाषा भी आध्यात्मिकता पर आधारित है। इसी कारण इसकी वर्णमाला प्राकृतिक है जिसकी कुछ अन्य विशेषताएँ अधोलिखित हैं।

1. इसके वर्णों का वर्गीकरण वैज्ञानिक रूप का है।

2. संसार की सभी भाषाओं से इसमें अधिक अक्षर हैं जो भाषा को अधिक उपयोगी बनाते हैं।

इसमें 16 (आजकल 13 ही) स्वर हैं जबकि अंग्रेजी में कुल अक्षर मात्र 26 हैं। हिन्दी/संस्कृत स्वर हैं—अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः।

3. व्यञ्जन 33 हैं जो 33 कोटि (प्रकार) देवताओं की ओर संकेत करते हैं। इस सन्दर्भ में कोटि का अर्थ करोड़ नहीं है जैसा कि कुछ लोग अनुमान लगाते हैं क्योंकि देवता 33 ही हैं। व्यञ्जनों का वर्गीकरण ध्यान देने योग्य है।

यथा— क ख ग घ ङ (क वर्ग)
च छ ज झ ञ (च वर्ग)
ट ठ ड ढ ण (ट वर्ग)
त थ द ध न (त वर्ग)
प फ ब भ म (प वर्ग)
य र ल व + (अन्तस्थ)
श ष स ह (ऊष्म)
क्ष त्र ज्ञ

इसके प्रथम 20 अक्षर 5-5 वर्गों में विभाजित किए गए हैं। इसकी 5 पंक्तियाँ क से प तक 5 भूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) की ओर संकेत करती हैं जो कि सृष्टि का आधार हैं तथा प्रत्येक के 5-5 अक्षर पाँचों प्राणों का बोध कराते हैं जिनसे सृष्टि के समस्त कार्य संचालित होते हैं। इनके बाद के 8 अक्षर आठों दिशाओं के द्योतक हैं। अन्तिम तीन अक्षर तीनों आदि देवों–ब्रह्मा, विष्णु, महेश का बोध कराते हैं। अन्तिम अक्षर दो अक्षरों से मिलकर बने हैं। जो शिव एवं शक्ति दोनों की संयुक्तता दर्शाते हैं अर्थात् पूरी सृष्टि के कार्यकलाप का बोध विद्वान लोग इससे जान सकते हैं।

(14) प्रत्येक वर्ण का मूल अर्थ होता है, फिर यौगिक प्रयोग से दो वर्णों, तीन, चार आदि वर्णों से शब्द बनते हैं जिनके अर्थ अलग-अलग होते हैं। स्वरों के योग से भी अर्थ भिन्न होते हैं, यथा—अ=नहीं/अज्ञान, आ=बुलाना, क=जल/कीचड़, ख=आकाश, ग=गमन, घ=सूँघना, ज्ञ=ज्ञान आदि पुनश्च दो अक्षर लें—आई=माता, खग=पक्षी, चल=चलना, गज=हाथी इसी प्रकार आगे समझें फिर तीन वर्णों के—जलज, कमल, भवन। इसी प्रकार स्वरों (मात्राओं) के योग से—ईख, केश, देश"""।

(15) वस्तुतः देवनागरी वर्णमाला 'अ' (अज्ञान) से आरम्भ होकर 'ज्ञ'=ज्ञान पर समाप्त होती है और ईश्वरीय होने के कारण एक मन्त्र है जिसे "मालामन्त्र" कहते हैं और कुछ लोग इसका जप करते हैं।

(16) अन्ततः यह सबसे प्राचीन लिपि है इसका उद्गम कोई नहीं जानता इसकी प्रामाणिकता इससे स्वयं सिद्ध होती है कि वेद इसी लिपि में अनुबद्ध हैं तथा चूँकि वेद सर्व प्राचीन हैं अतः यह लिपि भी सर्व प्राचीन सिद्ध हो जाती है। महापण्डित (महर्षि) दयानन्द सरस्वती ने अन्वेषण करके वेद का रचना काल 1,96,80,53,095 वर्ष का बताया था।

उपरोक्त अद्भुत विशिष्टताएँ अद्भुतताएँ देवनागरी को समस्त भाषाओं में सिरमौर सिद्ध करती हैं। इनके अतिरिक्त भी विशेषताएँ हो सकती है जिनका मुझे ज्ञान नहीं है। विद्वत्जनों से अनुरोध है कि मेरे उपर्युक्त विवरण/विश्लेषण में यदि कोई त्रुटि परिलक्षित हो तो कृपाकर मुझे अवश्य सूचित करें उन त्रुटियों के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।

जय हिन्द

□□

नवछन्द

(अरूज़े-नौ)

(हिन्दी-उर्दू के लिए नवीन छन्दशास्त्र)

रचनाकार

पण्डित सुघोष भारद्वाज

तख़ल्लुस 'ख़्वाब' अकबराबादी

प्रकाशक

ऐवाने-ख़्वाब

कमला नगर, आगरा-282004